भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 4 | **नवम्बर** 2003 | **अंक** 11

कोई व्यक्ति भले ही इंटरनेट पर अच्छा साहित्य पढ़ ले, लेकिन पुस्तकें अपने अन्दर निहित विशेषताओं के कारण सदैव लोकप्रिय बनी रहेंगी।

अच्छी पुस्तकें केवल हमारा मनोरंजन नहीं करती, बल्कि वह हमारे जीवन में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों को हल करने में भी सहयोग करती हैं। क्रिकेट क्लब की ही तरह हर गाँव-कस्बे में किताब क्लब बनने चाहिए। — **मुरलीमनोहर जोशी**

कविता आदमी को अपने को समझने, दूसरों से संवाद कर पाने, जगत-समीक्षा और आत्मालोचन की बेहद आत्मीय और मार्मिक विधा है।

कविता शायद आदमी बना नहीं सकती लेकिन आदमी बने रहने में हमारी मदद जरूर कर सकती है। वह समाज बदल नहीं सकती पर उसकी विसंगतियों और अंतर्विरोधों को हमारे सामने ला सकती है। वह चोट करती है लेकिन घायल नहीं।—**अशोक वाजपेयी**

अक्षरों की रोशनी में, अध्ययन का सिलसिला,
मंजिलों तक बढ़ रहा है, ज्ञान का यह काफिला।
जिंदगी की राह में, मैं था अकेला तब तलक,
पुस्तकों का साथ जब तक था नहीं मुझको मिला।

— सूर्यकुमार पाण्डेय

पत्नी बोली पुस्तक-प्रेमी पति से करके मस्तक का स्पर्श।
'यदि मैं पुस्तक होती, मिलता हाथों में रहने का हर्ष।'
पति—'नहीं प्रिये, पञ्चाङ्ग कहो, जो—नया रूप पाता प्रतिवर्ष।'

आइये इन्हें स्मरण करें

हिन्दी प्रकाशन आज भले ही व्यवसाय बन गया हो, किन्तु एक समय था जब हिन्दी पुस्तकों का प्रकाशन एक मिशन था, त्याग और तपस्या का प्रतीक था। हिन्दी प्रकाशन के कर्णधारों ने देश में राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया। सामाजिक तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

एक समय पंजाब की प्रमुख भाषा उर्दू थी, उर्दू में ही पत्र निकलते थे, पुस्तकें छपती थीं। आर्य समाज का आन्दोलन जोरों पर था। अमृतसर के प्रसिद्ध आर्य समाजी हकीम फतहचन्द के यहाँ राजपाल जी ने बारह रुपये मासिक पर नौकरी शुरू की। हिन्दी सीखी पत्रकार बने 'सद्धर्म प्रचारक' के लिए सम्पादकीय लिखा। मिशनरी के रूप में आर्य समाज के लिए कार्य किया। भजनों का संग्रह 'पुष्पांजलि' नाम से प्रकाशित किया। 'आर्य पुस्तकालय' की स्थापना कर आर्य समाज सम्बन्धी लेख, व्याख्यान तथा भजन प्रकाशित किये। लाला हंसराजजी के व्याख्यान और लेख 'मोतियों के हार' नाम से प्रकाशित किया। वैदिक धर्म, समाज सुधार व राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम पर अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की। थोड़े समय में ही राजपालजी लेखकों के प्रति सद्भाव से देश के बड़े प्रकाशक बन गये। भाई परमानन्दजी का कथन है—''केवल महाशय राजपाल नियम से लेखकों को पूरा आदर व समय पर पैसे देते हैं, बाकी तो सब वैसे ही हैं।''

पंजाब में जब उर्दू और पंजाबी ही पढ़ने-लिखने की मुख्य भाषा थी। महाशय राजपालजी ने आज से 80 वर्ष पूर्व में आर्य पुस्तकालय-सरस्वती आश्रम की स्थापना कर हिन्दी प्रकाशन का शुभारम्भ किया। उन्नत प्रकाशन स्तर के लिए इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद में पुस्तकें छपवाई, आवरण पर रवि वर्मा के चित्र छापे।

भाई परमानन्दजी जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने आजन्म काले पानी की सजा दिया था उनकी पुस्तकें प्रकाशित की। 'तारीख-ए-हिन्द' (भारत का इतिहास) पुस्तक जब्त की गई। अन्य पुस्तक 'देश की बात' पर बनारस की अदालत में मुकदमा चला।

मुसलमानों द्वारा योगेश्वर श्रीकृष्ण और महर्षि दयानन्द पर भद्दे और अश्लील शब्दों में पुस्तकें निकालने पर राजपालजी ने 1923 में 'रंगीला रसूल' पुस्तक प्रकाशित की। छोटे-बड़े न्यायालय में मुकदमा चला, अंतत: निर्दोष घोषित हुए। मुसलमान इससे कुपित हुए। 26 सितम्बर 1927 को खुदाबख्श नामक एक मुसलमान ने उन पर हस्पताल रोड दुकान में प्राणघातक आक्रमण किया। दैवयोग से वहाँ स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज और स्वामी वेदानन्दजी उपस्थित थे। उन्होंने घातक को ऐसा कसकर दबोचा कि वह अपने क्रूरतापूर्ण निश्चय में सफल न हो सका। घातक को सात वर्ष का कारावास मिला।

6 अप्रैल 1999 शनिवार का वह दिन भुलाए नहीं भूलता जब महाशयजी अपनी दुकान में आराम कर रहे थे, कर्मचारी पुस्तकें लगा रहा था। इल्मदीन नामक एक मुसलमान युवक छुरा छिपाए हुए दुकान में आया और आते ही महाशय राजपालजी के सीने में दोधारी छुरा घोंप दिया। महाशय राजपाल शहीद हो गये। इल्मदीन पकड़ा गया। मुस्लिम समाज ने उसे बचाने के लिए 18 हजार का चन्दा किया। मोहम्मद अली जिन्ना को भारी फीस देकर पंजाब हाईकोर्ट में खड़ा किया गया। 17 जुलाई 1929 को फाँसी की सजा बहाल हो गई।

आजादी के बाद दिल्ली में 'राजपाल एण्ड सन्ज़' महाशय राजपालजी की स्मृति है जो उनके वंशजों मल्होत्रा बन्धुओं सर्वश्री दीनानाथ तथा विश्वनाथजी ने लाहौर से विस्थापित होने पर स्थापित किया। हिन्दी प्रकाशन जगत में आज उनकी विशिष्ट भूमिका है।

पंजाब से आये कितने विस्थापित बन्धुओं ने कुछ ने अपना पारिवारिक व्यवसाय त्यागकर पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में आने का साहस किया। उनमें उल्लेखनीय हैं—हिन्दी भवन के श्री इन्द्रचंद

शेष पृष्ठ 6 पर

पुरस्कार-सम्मान

डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी सम्मानित

नाथ द्वारा (राजस्थान) सुप्रसिद्ध संस्था 'साहित्य मण्डल' ने 'नवनीत' के सम्पादक **डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी** को प्रशस्ति-पत्र भेंटकर उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया। इस अवसर पर 'सम्पादक शिरोमणि' का अलंकार प्रदान करते हुए मन्दिर के प्रधान नरहरि ठाकर और समारोह के अध्यक्ष ने उनके सम्पादन कार्यों की प्रशंसा की। 'साहित्य मण्डल' के मंत्री श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा ने कहा कि डॉ० त्रिवेदी कुशल सम्पादक हैं। उन्होंने 'नवनीत' को 'नवनीत' बनाये रखा है।

उदयपुर की संस्था 'कथारंग' ने भी डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी को उनकी हिन्दी निष्ठा के लिए उन्हें 'हिन्दी रत्न' से अलंकृत किया।

उदयपुर की 'निर्माण समाज सेवी संस्थान' ने स्थल आश्रम में उसके प्रधान मेवाड़ महामण्डलेश्वर महन्त मुरली मनोहरशरण शास्त्री ने भी अपने आश्रम की ओर से उन्हें अभिनन्दन-पत्र भेंट किया।

अफ्रीकी लेखक कोएत्जी को साहित्य का नोबल

स्वीडिश अकादमी ने वर्ष 2003 का प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार दक्षिण अफ्रीकी लेखक **जॉन मैक्सुएल कोएत्जी** को देने की घोषणा की है। इस कड़ी में वैकल्पिक नोबेल पुरस्कार न्यूजीलैण्ड के पूर्व प्रधानमंत्री डेविड लैंज को प्राप्त होगा। कोएत्जी को पुरस्कारस्वरूप दस लाख तीस हजार डालर प्राप्त होंगे।

1946 को केपटाउन में पैदा हुए कोएत्जी जर्मन और अंग्रेजी साहित्य के अच्छे ज्ञाता हैं। उन्होंने 1974 में 'डस्क लैंड' से उपन्यास लेखन की शुरूआत की थी लेकिन उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक परिदृश्य पर 1980 में लिखे उपन्यास 'वेटिंग फोर दी बार्बेरियंस' के जरिये ख्याति प्राप्त हुई।

कोएत्जी को उनकी कृति 'लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ माइकल' के लिए 1983 में बुकर पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। नोबेल पुरस्कार घोषित करने वाली ज्यूरी ने प्रशस्ति पत्र में कोएत्जी के लिए लिखा है कि कोएत्जी के उपन्यास 'डिस्ग्रेस', 'वेटिंग फॉर दी बोर्बेरियन' और 'इन दी हार्ट ऑफ दी कंट्री' कथानक की दृष्टि से सुघड़, मौलिक संवाद तथा विश्लेषणात्मक बौद्धिकता से परिपूर्ण है।

निर्मला जोशी की गीत-कृति पुरस्कृत

हिन्दी की प्रतिष्ठित गीत-कवयित्री **श्रीमती निर्मला जोशी** को उनकी पहली गीत-कृति 'दर्पण है सरिता' पर जबलपुर के लब्धप्रतिष्ठ गीत-कवि स्व० पं० भवानीप्रसाद तिवारी के नाम पर स्थापित पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्हें 21 सौ रुपये नगद, प्रशस्ति-पत्र एवं शाल श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।

'संकल्प रथ' को पुरस्कार

भोपाल की बहुचर्चित मासिकी 'संकल्प रथ' को कादम्बिनी क्लब इसी वर्ष स्थापित स्व० विश्वंभरदयाल अग्रवाल साहित्यिक पत्रकारिता पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत सम्पादक **श्री राम अधीर** को पाँच हजार रुपये नगद, प्रशस्ति-पत्र एवं शाल-श्रीफल देकर सम्मानित किया गया। गीत-विमर्ष की इस संवाहिका पत्रिका को 1999 में माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान ने स्व० रामेश्वर गुरु साहित्यिक पत्रिका पुरस्कार भी प्रदान किया था।

दूधनाथ सिंह को कथाक्रम सम्मान

वर्ष 2003 का प्रतिष्ठित आनन्दकार स्मृति कथाक्रम सम्मान समकालीन कथा साहित्य के वरिष्ठ लेखक **दूधनाथ सिंह** को प्रदान किया गया। यह निर्णय प्रख्यात कथाकार श्रीलाल शुक्ल की अध्यक्षता में कथाक्रम सम्मान की निर्णायक समिति की बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया। समिति के अन्य सदस्यों में वरिष्ठ कथाकार मुद्रा राक्षस, शैलेन्द्र सागर, शिवमूर्ति व राकेश थे। अपनी संवेदना और संरचना के कारण दूधनाथ सिंह सदा चर्चा में रहे हैं। आइसबर्ग, रीछ, सपाट चेहरे वाला आदमी, प्रतिशोध जैसी कहानियाँ हिन्दी कथा साहित्य में एक विशेष छाप छोड़ती है। 'निराला : आत्महंता आस्था' जैसी श्रेष्ठ आलोचना पुस्तक उनके खाते में है। 'धर्मक्षेत्रे : कुरुक्षेत्रे', 'नमो अंधकारम्' और 'निष्कासन' के बाद पिछले दिनों प्रकाशित उपन्यास 'आखिरी कलाम' उनकी प्रतिष्ठा को नई ऊँचाइयाँ प्रदान करता है। स्मृतियों का आलोचनात्मक परीक्षण करते हुए लिखी गई उनकी पुस्तक 'लौट आ ओ धार!' बहुचर्चित रही है। दूधनाथ सिंह को यह सम्मान 8 नवम्बर को कथाक्रम के अवसर पर लखनऊ में प्रदान किया गया।

डॉ० युगेश्वर को 'दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान'

राजस्थान के नागौर जिले की सुप्रतिष्ठित साहित्यिक-सामाजिक संस्था श्री छोटी खाटू हिन्दी पुस्तकालय द्वारा पं० दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में प्रवर्तित 14वें वर्ष का साहित्य सम्मान लब्ध प्रतिष्ठ विचारक, भाषाशास्त्री, समालोचक, काशी विद्यापीठ के हिन्दी के पूर्व आचार्य तथा सुप्रसिद्ध उपन्यासकार **डॉ० युगेश्वर** को उनके उत्कृष्ट साहित्य सृजन एवं विचारोत्तेजक राष्ट्रवादी लेखन हेतु 15 अक्टूबर को छोटीखाटू में आयोजित एक विशेष समारोह में कर्नाटक के राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने प्रदान किया। सम्मान स्वरूप ग्यारह हजार की नगद राशि एवं मान-पत्र भेंट किया।

कवि बदरीनारायण को भोजपुरी सम्मान

गोविन्दवल्लभ पंत संस्थान, इलाहाबाद में सामाजिक इतिहास के अध्यापक तथा मानव विकास संग्रहालय के संयोजक **श्री बदरीनारायण** को बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान 19 अक्टूबर 2003 को हिन्दुस्तानी अकादमी में प्रदान किया गया। बदरीनाथ का काव्य संकलन 'सच सुने कई दिन हुए' प्रकाशित है, नया संकलन 'शब्द पदीयम्' शीघ्र प्रकाशित हो रहा है।

जीवितराम सेतपाल सम्मानित

राजस्थान सिन्धी अकादमी (जयपुर) द्वारा आयोजित 'अखिल भारतीय कहानी' प्रतियोगिता-2003 के अन्तर्गत 'प्रोत्साहन' के सम्पादक **जीवितराम सेतपाल** की कहानी 'कबूतरखानो' को पुरस्कृत किया गया। उन्हें प्रमाण-पत्र, प्रतीक चिह्न तथा नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

गुलाब कोठारी को तुलसी सम्मान

उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत ने 21 अक्टूबर को सूरत में वरिष्ठ हिन्दी लेखक और पत्रकार **गुलाब कोठारी** को प्रतिष्ठित 'आचार्य तुलसी सम्मान' से सम्मानित किया। कोठारी 'राजस्थान पत्रिका' के प्रधान सम्पादक हैं। उन्हें सम्मान के तहत 51 हजार रुपये नगद और प्रशस्ति पत्र दिया।

रमाकांत स्मृति पुरस्कार

छठा रमाकान्त स्मृति पुरस्कार **सूरजपाल चौहान** को उनकी कहानी 'अहल्या' के लिए दिया जाएगा। यह कहानी 'हंस' के दिसम्बर 2002 के अंक में छपी थी। इस बार के निर्णायक वरिष्ठ कवि आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी थे।

प्रतिमा पर छतरी के लिए निराला के पौत्र उपवास पर बैठे

महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी साहित्य में भले पूजनीय हों लेकिन इलाहाबाद नगर निगम की नजर में उनकी कोई अहमियत नहीं है। अत: उनके पौत्र अखिलेश त्रिपाठी की कई बार की चेतावनी के बाद अन्तत: दारागंज स्थित अपने बाबा की प्रतिमा के ऊपर छतरी का निर्माण कराने के लिए उन्हें अनिश्चितकालीन उपवास पर बैठना पड़ा।

लेखक होने का अर्थ

हिन्दी के लेखकगण अपनी ताकत और ऊर्जा पाठकों से अर्जित करने की बजाय पुरस्कारों और सत्ता प्रतिष्ठानों से करने लगे हैं। यह प्रवृत्ति पिछले कुछ वर्षों में ज्यादा ही बढ़ी है। अब आये दिन लेखक लखटकिया पुरस्कारों से सम्मानित होने लगे हैं। सत्ता प्रतिष्ठानों में उनकी भागीदारी बढ़ने लगी है, राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री या उपराष्ट्रपति द्वारा उनकी पुस्तकों के लोकार्पण और विमोचन होने लगे हैं, उनकी षष्टिपूर्ति या अमृत महोत्सव भी सत्ता के गलियारे में होने लगे हैं और वे खुद भी नेताओं के जन्मदिन पर उनकी तारीफ के पुल बँधने लगे हैं।

हिन्दी के ज्यादातर लेखकों ने अब 'संघर्ष' और साधना की बजाय 'शार्टकट' का रास्ता अपना लिया है क्योंकि संघर्ष से, साधना से उसे वह तात्कालिक प्रसिद्धि या चर्चा नहीं मिलने वाली है जो 'इतर' कारणों से प्राप्त हो रही है। **—विमलकुमार**

स्मृति-शेष

वरिष्ठ पत्रकार जितेन्द्र सिंह नहीं रहे

प्रसिद्ध पत्रकार, समाजवादी चिन्तक और पत्रिकारिता के विद्वान प्रशिक्षक जितेन्द्र सिंह का गत शनिवार, 27 सितम्बर 2003 को पटना में निधन हो गया। उनकी उम्र 79 वर्ष थी। जितेन्द्र सिंह का जन्म वाराणसी जिले (अब चन्दौली) के सकलडीहा कोटग्राम में प्रतिष्ठित क्षत्रिय परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई थी। यहीं से उन्होंने प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विषय में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उन्होंने पत्रकारिता जीवन का शुभारम्भ इलाहाबाद के अंग्रेजी दैनिक 'लीडर' से शुरुआत की थी। इलाहाबाद में 'परिमल' से भी जुड़े थे। बाद में पटना में 'सर्चलाइट' और अन्त में 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' के बिहार और उड़ीसा के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया था। वे जयप्रकाश के समग्र क्रान्ति आन्दोलन से जुड़े थे। वे दिल्ली से प्रकाशित अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका 'गाँधियन्स इन एक्सन' के सम्पादक थे। वे सच्चिदानंद सिन्हा पत्रकारिता संस्थान, पटना के निदेशक भी थे।

साहित्यकार कृष्णचन्द्र शर्मा का निधन

प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खू' का 29 सितम्बर 2003 को दिल्ली में निधन हो गया। वे 80 वर्ष के थे। श्री शर्मा का पैर फिसल जाने से सर पर गम्भीर चोट आ गयी थी, जिसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सर पर गहरी चोट आने के कारण सायं लगभग सवा चार बजे श्री शर्मा का निधन हो गया।

कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु' (1924 ई०) के कई उपन्यास प्रकाशित हैं। इनमें 'आदमी का बच्चा' (1950 ई०), 'संक्रान्ति' (1951 ई०), 'भँवर जाल' (1954 ई०), 'नागफनी' (1959 ई०), 'सोम देवता की घाटी' (1960 ई०), 'लाल ढाँग' (1968 ई०), 'मौत की सराय' (1970 ई०), 'रक्तयात्रा' (1978 ई०), 'दुर्बा' (1979 ई०), 'रेवती' (1979 ई०), 'महाश्रमण सुने और उनकी परम्परायें सुने' (1963 ई०) 'अस्तंगता', 'योगमाया' (1972 ई०), 'सोने का मृग' (1960 ई०), 'चन्दनवन की आग' (1988 ई०) आदि उल्लेखनीय हैं। भिक्खुजी इतिहास, धर्म और दर्शन के अध्येता थे। उनके अनुसार काल-प्रवाह में मूल्यों और विचारों की संक्रान्ति बनी रहती है। एक विचारधारा के अप्रासंगिक होने के साथ दूसरी सामने आती है और दोनों की संक्रान्ति झेलने के लिए मनुष्य विवश होता है। भिक्खुजी निरन्तर जीवन-सत्य की शोध में प्रवृत्त रहे हैं। अपने पहले उपन्यास 'आदमी का बच्चा' में उन्होंने यह दिखाया था कि 'विकास की अव्याहत परम्परा में विकासशील मनुष्य विकास के नूतन स्तरों पर प्रतिष्ठित होकर भी शिशु मात्र रहता है।' 'भँवर जाल' में आपने सांख्य दर्शन के आधार पर मानव प्रकृति की जटिलता को समझने का प्रयास किया है। 'मौत की सराय' में फ्रांस की अठारहवीं शती की 'राज्यक्रान्ति' (1793 ई०) का चित्रण किया गया है। 'योगमाया' में योग-साधना का खोखलापन दिखाया गया है। 'सोने का मृग' में बम्बई के समृद्ध जीवन के मूल में व्याप्त गन्दगी, शोषण और कुरूपता का निदर्शन है। 'लाल ढाँग' में 'कृष्णप्रिया' नामक (श्रीकृष्ण को समर्पिता) एक ऐसी आस्थावान नारी का चित्रण किया गया है जिसके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में नवीन चेतना का उदय होता है और उसकी वृत्तियों का उन्नयन हो जाता है। 'रेवती' में दो भिन्न प्रवृत्ति वाली नारियों का द्वन्द्व दिखाकर नारी-चरित्र के वैशिष्ट्य का निदर्शन किया गया है। तात्पर्य यह कि भिक्खुजी ने अपने उपन्यासों में विविध सन्दर्भों में जीवन के रहस्य को समझने का प्रयास किया था।

इला डालमिया नहीं रहीं

स्व० सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के कार्यक्रमों की प्रबन्धक इला डालमिया (पति श्री निरंजन कोइराला) का निधन हो गया। विगत दो वर्षों से वे मृत्यु से संघर्ष कर रही थीं। अज्ञेयजी 'वत्सल निधि' जिसे उन्होंने ज्ञानपीठ से प्राप्त वाग्देवी पुरस्कार की राशि तथा उतनी ही राशि अपने पास से मिलाकर स्थापित की थी की प्रबन्धन न्यासी थीं। उन्होंने अज्ञेयजी की स्मृति को अक्षुण्ण रखते हुए वत्सल निधि के अनेक आयोजन किये। नये साहित्यकारों के बीच सद्भाव जागृत करते हुए तरुण लेखकों में आत्मविश्वास बढ़ाया। इलाजी ने अज्ञेयजी की अनेक अप्रकाशित रचनाओं का सम्पादन कर उन्हें प्रकाशित कराया। 2011 ई० में आयोजित होने वाले अज्ञेयजी के शती उत्सव की योजना बनाती रहीं। 'वत्सल निधि' की वे निधि थीं और 'अज्ञेय'जी की स्मृति-प्रहरी थीं। उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

भारतीय वाङ्मय में पुस्तक परिचय तथा समीक्षा

हमारा उद्देश्य 'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से केवल अपने प्रकाशनों का प्रचार-प्रसार नहीं है, वरन् भारतीय साहित्य जगत विशेषकर हिन्दी क्षेत्र की गतिविधि तथा प्रमुख प्रकाशनों से पाठकों को परिचित कराना है। इसी उद्देश्य से 'भारतीय वाङ्मय' अपने पृष्ठों में वृद्धि कर कतिपय नई पुस्तकों की समीक्षा अथवा परिचय प्रकाशित करेगा। नई पुस्तकों के प्रकाशन की सूचना भी देगा। प्रकाशकों को समीक्षा के लिए अपनी एक-दो प्रमुख कृति भेजनी चाहिए।

—सम्पादक

विशिष्ट-पत्र

धनपत राय (प्रेमचंद) का पत्र प्रसादजी के नाम

'हंस' कार्यालय, सरस्वती प्रेस, काशी
ता० २४.१.१९३०

प्रिय प्रसादजी,

पहले मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं 'कंकाल' पर आपको बधाई दूँ। मैंने इसे आदि से अन्त तक पढ़ा और मुग्ध हो गया। आपसे मेरी जो पुरानी शिकायत थी वह बिलकुल मिट गयी। मैंने एक बार आपकी पुस्तक 'स्कन्दगुप्त' की आलोचना करते हुए लिखा था आपने इसमें गड़े मुर्दे उखाड़े हैं। इस पर मुझे काफी सजा भी मिली थी, पर जो लेखनी वर्तमान समस्याओं को इतने आकर्षक ढंग से जनता के सामने रख सकती है, इस तरह दिलों को हिला सकती है, उसे, फिर वही बात मेरे मुँह से निकलती है, क्षमा कीजिए। पूर्वजों की कीर्ति का भविष्य के निर्माण में भाग होता है और बड़ा भाग होता है, लेकिन हमें तो नये सिरे से दुनिया बनानी है। अपनी किस पुरानी वस्तु पर गौरव करें—वीरता पर? दान पर? तप पर? वीरता क्या थी? अपने ही भाइयों का रक्त बहाना। दान क्या था? एकाधिपत्य का नग्न नृत्य। और तप क्या था? वही जिसने आज कम से कम 80 लाख बेकारों का बोझ हमारी दरिद्र जनता पर लाद दिया है। अगर 5 रुपये प्रति मास भी एक साधु की जीविका पर खर्च हो तो लगभग 20 करोड़ रुपये हमारी गाढ़ी कमाई के उसी पुराने 'तप' के आदर्श की भेंट हो जाते हैं। किस बात पर गर्व करें वर्णाश्रम धर्म पर, जिसने हमारी जड़ खोद डाली। 'कंकाल' में एक समाज के सच्चे हितैषी की आँखों का गर्म, बड़ी-बड़ी बूँदों वाला आँसू है। घंटी और यमुना दोनों का क्या कहना। मैं 'हंस' में इसकी बृहद् आलोचना करूँगा।

'हंस' का नाम आ गया। आपसे उसके लिए कुछ याचना करूँ? मैं छोटे-छोटे 'कंकाल' चाहता हूँ। या कोई उपन्यास हो तो वह भी बड़े प्रेम और आदर से प्रकाशित करूँगा। काशी से साहित्य की कोई पत्रिका नहीं निकलती। काशी के लोगों की कलम से दूसरे नगरों को फ़ैज पहुँचता है और काशी में सन्नाटा। मस्जिद में दिया जले और घर में अँधेरा। मैं धनी नहीं हूँ, मजदूर आदमी हूँ लेकिन काशी का यह अभाव मुझे लज्जास्पद जान पड़ा और मैंने 'हंस' निकालने का निश्चय कर लिया। धन तो आपसे अभी नहीं माँगता, शायद वह भी माँगूँ, लेकिन आपकी लेखनी की विभूति अवश्य माँगता हूँ। होली तक पत्र निकाल देना चाहता हूँ। सबसे पहला हक काशी का है इसे खयाल रखिए। पत्र का इंतजार कर रहा हूँ।

भवदीय
धनपत राय

'हंस' का प्रकाशन मार्च 1930 से आरम्भ हुआ। फरवरी 1936 में आर्थिक कारणों से प्रेमचंदजी को 'हंस' को जैनेन्द्रजी के सम्पादकत्व में सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली को सौंपना पड़ा।

पाठकीयता की वृद्धि कैसे हो ?

हिन्दी के समक्ष एक बड़ा संकट यह है कि वह दैनिक पठन वृत्ति से परे होती जा रही है। जनसाधारण को यह भ्रम है कि वह हिन्दी बोल लेता है, इसलिए पुस्तक पढ़ने यानी कुछ नया सीखने की आवश्यकता नहीं है। जन-भाषा और मातृभाषा को तो लोग परस्पर सुनकर सीख लेते हैं अर्थात् उसे व्याकरण के माध्यम से नहीं सीखते। अंग्रेजी को विधिवत व्याकरण के माध्यम से पढ़ते हैं, क्योंकि एक तो वह कठिन है, बिना व्याकरण रटे समझ में नहीं आती है, दूसरे उसका पठन-पाठन तथाकथित प्रतिष्ठा का प्रतीक भी है। हमें इस उदासीनता का समाधान खोजना होगा।

पाठकीयता की समस्या के मुख्य तीन कारण हैं—

1. समकालीन जीवन में अस्त-व्यस्तता बहुत हो गयी है। सत् साहित्य पढ़ने के लिए अब इत्मीनान नहीं रहा। दौड़ते-भागते हम अखबार की सुर्खियाँ पढ़ लेते हैं या वक्त काटू सस्ते उपन्यास या रोचक पत्रिकाएँ पढ़ लेते हैं। **गम्भीर साहित्य के अध्येता दिनोंदिन कम होते जा रहे हैं। एक दशक पूर्व बुद्धिजीवी होना गर्व का विषय था। किसने क्या पढ़ा ? इसकी प्राय: बढ़-चढ़कर चर्चाएँ होती थीं। अपने-अपने बैठकों में शोकेस के भीतर लोग विश्व विश्रुत क्लासिक कृतियों को सजाकर रखते थे। अब उनकी जगह वी०सी०आर० और इलेक्ट्रॉनिक खिलौने रखे जा रहे हैं।** बौद्धिक चर्चा करनेवालों को 'बोर' माना जा रहा है। समस्त चिन्तन दैनिक राजनीति, अर्थस्पर्धा, फैशनपरस्ती अर्थात् उपभोक्तावाद में केन्द्रित है। श्रेष्ठ पुस्तकों और पत्रिकाओं को पढ़ना हमारी दिनचर्या में नहीं रहा। शिक्षा संस्थाओं के विद्यार्थी केवल बाजारू नोट्स पढ़ते हैं। देश के वरिष्ठ नागरिक छठें दशक के बाद सहसा आध्यात्मिक हो जाते हैं और 'गीताप्रेस' का साहित्य पढ़ने लगते हैं। कुछ प्रगतिशील युवा अवश्य बौद्धिक विवेचन से व्यग्र दिखाई देते हैं, लेकिन वे 'लाल किताब' के ऊपर नहीं उठ पाते। समस्या है कि आम आदमी के बीच स्तरीय पुस्तकों को कैसे पहुँचाया जाये ? इन दिनों तो प्राय: यह देखा जा रहा है कि अधिसंख्य पुस्तकों के केवल तीन पाठक मिलते हैं। एक वह, जिसने किताब लिखी है, दूसरा वह, जो सम्पादन कर रहा है और तीसरा वह, जो प्रूफ रीडिंग कर रहा है। पुस्तक का चौथा पाठक कौन है ? इस प्रश्न पर सब निरुत्तर हैं, सब मौन हैं। 'मन्द: कवि यश: प्रार्थी' बेचारे रचनाकर पहले अपने संसाधनों से पुस्तक का मुद्रण कराते हैं, फिर खुद ही खर्च उठाकर लोकार्पण समारोह रचाते हैं। कुछ ठलुआ समीक्षक पढ़े बिना उस पर भीषण भाषणा भी कर आते हैं, लेकिन अन्तत: 'ढाक के वही तीन पात'। बेचारा लेखक स्वप्रकाशित पुस्तकों की प्रतियाँ लिये हुए सरकारी संस्थानों के चक्कर लगाता है। रचना में जिन मूल्यों की दलील दी थी, उनके विरुद्ध दलालों को 'डील' करता है। निठल्लुओं के बीच उक्त पुस्तक वितरण करता है और साहित्य सर्जना का छद्म तोष अर्जित करता रहता है। आवश्यकता है योजनाबद्ध रूप से पाठकों को 'मोटीवेट' किया जाये। हमें पहले उनके मध्य कुछ नि:शुल्क साहित्य वितरित करना होगा, फिर गाँवों और कस्बों में जाकर पाठकों के शिविर लगाने होंगे। पिछले दशक में मध्यप्रदेश शासन ने ग्राम गोष्ठियों को ऐसी ही एक योजना चलायी थी। यदि इन कवि लेखकों को वाहन-सुविधा देकर यदा-कदा गाँवों-कस्बों के मंचों तक पहुँचा दिया जाये, जहाँ वे ग्रामीण व्यवस्था पर हिन्दी की रचनाएँ लिखकर दर्शक श्रोता वर्ग को स्वयं सुनाएँ तो सम्भव है उनका साहित्यिक आस्वाद फिर से लौट आये। जैसे मियादी बुखार से त्रस्त रोगी का जायका बिगड़ जाने पर कुछ विशिष्ट रासायनिक पदार्थ खिलाये जाते हैं, उसी प्रकार आज की मनोरुग्ण पीढ़ी को रोचक रसायनों के साथ नया साहित्यास्वाद देना होगा। आवश्यकता है, 'सुगर कोटेड कुनैन' की। हिन्दी में इस प्रकार की रचनाओं की कमी नहीं है। आवश्यकता है—

1. रोचक कृतियों का चयन किया जाये।
2. सस्ती पुस्तकों का अधिकाधिक प्रकाशन किया जाये।
3. अधिकाधिक पुस्तकालय खोले जायें।
4. चलते-फिरते (मोबाइल) वाचनालय शुरू किये जायें।
5. किराये पर पत्र-पत्रिकाएँ एवं पुस्तक देनेवाली दुकानें खोली जायें।
6. पुस्तक पठन की प्रतियोगिताएँ चलायी जायें।
7. बाजारू किताबों और 'नील साहित्य' पर प्रतिबन्ध लगाये जायें।

इन सबके लिए आवश्यकता है कि पठन-पाठन को प्राथमिकता दी जाये। इन दिनों खरीद कर पढ़ने की प्रथा लगभग समाप्त हो गयी है। इसका एक कारण है गरीबी, किन्तु उससे बड़ा कारण है—अनिच्छा। भारतीय बाजारों में फैशन की दुकानों, होटलों और क्लबों में दिनोंदिन भीड़ बढ़ती जा रही है। हाँ, किताबों की खरीद कम होती जा रही है। कई लोग प्रकाशन या विक्रय का धन्धा छोड़ भागे हैं। शायद इसमें लाभांश का औसत कम है, किन्तु अनेक प्रकाशकों को रातों-रात करोड़पति होते देखा जा रहा है, भले ही वे सरकारी थोक खरीद के कारण मालामाल हुए हों। आवश्यकता है कि आम पाठक को पुस्तक क्रेता बनाया जाये। इसके लिए सस्ती पुस्तकें, पॉकेट, पॉकेट एडिशन, अच्छे संकलन, कम्प्यूटर बुक्स आदि की व्यवस्था करनी होगी।

क्या ऐसा भी दिन आयेगा, जब टी०वी० पर एशियन स्काई शाप वाले विषयानुसार पुस्तकों का विज्ञापन करके उनकी त्वरित आपूर्ति कर देंगे, जब अखबार की तरह अच्छी पुस्तकें रोज-बरोज घर पहुँचा दी जायेंगी ? उनकी सप्लाई पुस्तक केन्द्रों की ओर से टेलीफोन सन्देश पाकर कर दी जायेंगी ? महानगरों में हर घर में पुस्तकों के भण्डारण की समस्या है। मजबूरन पुस्तकें कबाड़ियों के हाथ लग जाती हैं। आवश्यकता है, मुहल्लेवार पुस्तक बूथ बने। यह निर्विवाद है कि पुस्तकों की पढ़ाई से हिन्दी का प्रचार होगा और समाज का नया संस्कार होगा।

— प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित
पूर्व पत्रकारिता, हिन्दी विभागाध्यक्ष
लखनऊ विश्वविद्यालय

शिक्षा का अधिकार सार्वभौमिक होना चाहिये। जब तक समाज में सभी शिक्षित नहीं होंगे, तब तक मानवाधिकार की बात सार्थक नहीं हो सकती।

रोजी-रोटी के लिए अपना शहर या मुल्क छोड़कर माइग्रेट करना भी मानवाधिकार का हनन है लेकिन यह भी स्वेच्छया नहीं होता।

— प्रो० रामचंद्र राव
कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पत्र-पत्रिकाओं की गिरती साख

कहावत है कि 'साहित्य समाज का दर्पण होता है' 'पत्र-पत्रिकाओं स्वस्थ समाज, लोकतंत्र का आधार स्तम्भ होती है।' पत्रिकाएँ आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनीति समाज कुरीतियों पर प्रकाश डालते हुए स्वस्थ समाज की स्थापना में सहायता करती थी। लेकिन आज की पत्रिकाओं में अश्लील चित्र, अर्थहीन असमाजिक तत्वों को प्रकाशित करने में प्रतिस्पर्धा हो रही है। आज अच्छी पत्रिकाओं का मापदण्ड आवरण कथा, अश्लील चित्र आदि रह गए हैं जो पत्रिकाएँ सुसंस्कृत घर में डायनिंग टेबल की शोभा बढ़ाती थीं आज यह सब गुजरे जमाने की बात हो गयी है। बाजारवाद के खेल ऐसी असंस्कृत, असामाजिक कथा, भारतीय संस्कृति, भारतीय समाज और भारतीय पाठकों के लिए लाभदायक नहीं है। अत: लाभ के लिए ऐसी अशोभनीय हरकतों से बाज आना चाहिए तथा अपनी गरिमा का ख्याल रखना चाहिए।

— शिवजी सिंह
बिरला 'ब' छात्रावास, बी०एच०यू०

विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभाग से अनुरोध है कि पाठ्य-पुस्तक निर्धारित करते समय **विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी** द्वारा प्रकाशित संग्रहों, संकलनों पर विचार करें। ये संग्रह-संकलन प्राचीन-मध्यकालीन काव्य, रीतिकाव्य, कबीर, जायसी के संकलन, आधुनिक काव्य, छायावादोत्तर काव्य, कहानी संकलन, निबन्ध संकलन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों को दृष्टि में रखकर विशिष्ट विद्वानों द्वारा तैयार किये गये हैं। विचारार्थ संकलन उपलब्ध करा दिये जायेंगे।

लेखक-प्रकाशक-पाठक

हिन्दी की किताबें ज्यादा क्यों नहीं छपतीं और बिकती हैं, अंग्रेजी की किताबें ज्यादा छपती भी हैं और सारी बिक भी जाती हैं। अंग्रेजी की कोई किताब कामयाब होती है तो उसकी बहुत ज्यादा चर्चा होती है, अंग्रेजी मीडिया के साथ-साथ हिन्दी मीडिया भी उसकी चर्चा करता है। फिर क्या बात है कि पाठक ज्यादा होने के बावजूद हिन्दी किताबों की ऐसी चर्चा नहीं हो पाती है ? क्या हिन्दी में लेखन कम हो रहा है। निश्चित रूप से नहीं। तो क्या हिन्दी किताबों को लोकप्रिय बनाने और पाठकों तक उन्हें पहुँचाना और बौद्धिक समाज का ध्यान उस तरफ खींचने में हिन्दी जगत की कोशिशें कमजोर हैं ?

मराठी, बांग्ला, मलयालम या और दूसरी कई भारतीय भाषाओं में लेखन करने वाले लोग अपने पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय हैं और उनकी किताबें व्यावसायिक रूप से भी सफल हैं। क्षेत्रीय भाषाओं के लेखक अपने पाठकों के साथ तादात्म्य बिठाने में कामयाब रहे हैं, जबकि हिन्दी के लेखक ऐसा नहीं कर पाए हैं।

सच्चाई यह है कि पाठक तक किताबें पहुँचती नहीं हैं। ज्यादातर प्रकाशक किताबों को लोकप्रिय बनाने के लिए कोशिश ही नहीं करते हैं।

आज भी पुरानी और नयी पीढ़ी को आजादी से पूर्व या ठीक बाद के रचनाकारों की रचनाएँ याद हैं और लोग उन्हें जानते हैं, लेकिन समकालीन लेखकों से उनका परिचय नहीं है। यह रचनाकार, लेखन और भाषा के रूप में हिन्दी के बोन्साईकरण का समय हो गया है।

पुस्तकों के प्रसार का माध्यम अखबार है जिसके पाठकों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। लगातार नये अखबार निकल रहे हैं और हिन्दी अखबारों का प्रसार करोड़ों में पहुँच गया है।

इसके बावजूद अगर हिन्दी किताबें बड़ी संख्या में नहीं छपती हैं और पाठकों तक नहीं पहुँचती हैं तो इसके लिए हमें आत्मचिंतन करना होगा। अगर हम सिर्फ यह सोचकर बैठे रहे कि एक दिन सरकारी नीतियों के दम पर हम हिन्दी को सर्वोच्च भाषा बना देंगे तो हम मुगालते में हैं। हमें इसके लिए पहल करनी होगी और एक साक्षा अभियान शुरू करना होगा। इसमें लेखक-प्रकाश-पाठक-अनुवादक-प्रचारक सबको शामिल करना होगा।

आज भारतीय लेखकों की अंग्रेजी किताबें भारत के मुकाबले विदेशों में भी कम नहीं पढ़ी जाती हैं। विदेशों में हिन्दी पढ़ने वाला भी एक बड़ा वर्ग है, हालांकि यह वर्ग भी अब हिन्दी भूलता जा रहा है। गुएना, त्रिनिदाद मारीशस, फिजी, सूरीनाम सरीखे दर्जनों देश हैं जहाँ हिन्दी जानने वाले लोग हैं और उनमें खरीद क्षमता भी है, लेकिन उन तक किताब पहुँचाने का काम हमारा है।

—पवनकुमार शर्मा

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का सितम्बर अंक देखा। स्मृति शेष के अन्तर्गत विभिन्न राज्यों के साहित्यकारों के निधन एवं उनकी कृतियों की जानकारी मिली जिनके बारे में बहुत कम जानता था। पुरस्कार सम्मान से भी कई अछूती जानकारी मिली जो बिहार राज्य से प्रकाशित होने वाले दैनिक-पत्रों में नहीं मिली थी।

भारतीय साहित्य जगत व हिन्दी क्षेत्र से परिचित कराने का आपका प्रयास स्तुत्य है।

— प्रभातकुमार सिन्हा
व्याख्याता, इतिहास विभाग
जे०एम०डी०पी०एस० कालेज, मधुबनी

'भारतीय वाङ्मय' के हर अंक में आपके सम्पादकीय, पुस्तक जगत के सम्बन्ध में नवीन दृष्टि तथा चिन्तन को लक्षित करते हैं। साथ ही अन्य सामग्री साहित्य एवं साहित्कार के सम्बन्ध में कई जानकारियों से समृद्ध रहती है। इससे यह पत्रिका किसी प्रकाशक घराने की न लग कर लेखक, पाठक तथा साहित्य की समस्याओं तथा जानकारियों से भरपूर रहती है। आपके सम्पादकीय दृष्टि की यह व्यापकता है। बधाई स्वीकारें।

— अमरनाथ शुक्ल
पी-10, नवीन शाहदरा, दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' बराबर मिल रहा है। मुख पृष्ठ पर प्रकाशित आपकी टिप्पणी हमेशा पढ़ता हूँ। यह हम सभी के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक होती है। सितम्बर के अन्त में 'पुस्तक, पुस्तकालय, पाठक' टिप्पणी बहुत सामयिक और सटीक है। आजकल यह स्थिति केवल 'आदर्श' ही मानी जा सकती है। मेरी कामना है कि आपके प्रयत्नों का कुछ फल निकले।

सितम्बर अंक में सुश्री मैत्रेयी सिंह का परिचय और श्रद्धांजलि भी है। इनके बारे में हमें तो पता ही नहीं था। मैत्रेयी सिंह जी का संस्मरण भी आपने प्रकाशित किया है। इससे उस काल के बारे में नई जानकारियाँ मिलती हैं।

— अशोक महेश्वरी
राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०, नई दिल्ली

आपके प्रखर सम्पादकीय के साथ-साथ पुस्तक प्रकाशन संसार से जुड़ी समस्याएँ और उनके समाधान से जुड़ी आपकी चिन्ताएँ हर साहित्य प्रेमी की चिन्ताएँ हैं। आपकी आपत्तियों (वीणापाणि को लेकर) प्रशस्तियों (डॉ० विद्यानिवास मिश्र) बधाइयों (मीराबाई की 500वीं जयन्ती) और विविध प्रस्तुतियों के साथ हम सभी शरीक हैं। आपने इस पत्र के माध्यम से बनारस की एक खास कमी को पूरा किया है। यह पत्र पाठक लेखक और प्रकाशक के बीच एक महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक संवाद की भूमिका निभाएगा, पूरा विश्वास है। इसका कलेवर और सन्दर्भ और भी व्यापक हो इस कामना के साथ।

— कमल गुप्त
सम्पादक, कहानीकार, वाराणसी

'भारतीय वाङ्मय' हिन्दी की एक सम्पूर्ण पत्रिका है।

— अमरेन्द्र
आंगीप्रभा, भागलपुर

पत्रकारिता तथा साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर

ज्ञानचंद जैन एक प्रतिष्ठित लेखक तथा पत्र-सम्पादक हैं। पिछले 65 से अधिक वर्षों से हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा कर रहे हैं। आपकी मौलिक, अनुवादित, सम्पादित तथा संकलित पुस्तकों की संख्या बीस से अधिक है। इनमें से बहुत-सी अब अप्राप्य हैं। आपकी चर्चित पुस्तकों में अपने पैंसठ वर्षों के अंतरंग मित्र उपन्यासकार अमृतलाल नागर के संस्मरण *कथा-शेष,* समीक्षा के क्षेत्र में *प्रेमचंद-पूर्व के हिन्दी उपन्यास,* भगवान गौतम बुद्ध के ज्येष्ठ समकालीन भगवान महावीर की प्राचीन जैनागमों पर आधारित जीवनी *निगंठ ज्ञातपुत्र* तथा *संसार की श्रेष्ठ कहानियाँ* हैं।

आपकी पहली कहानी प्रेमचंद सम्पादित *हंस* में 1935 में छपी थी। उसी वर्ष प्रसाद के उपन्यास *तितली* पर आपकी लिखी समालोचना *माधुरी* में छपी थी। आपने हिन्दी गद्य की सभी विधाओं में लिखा है। आप पचास से अधिक वर्षों तक हिन्दी दैनिक पत्रकारिता से जुड़े रहे, प्रयाग से निकलनेवाले दैनिक *भारत* और लखनऊ से निकलने वाले दैनिक *नवजीवन* तथा दैनिक *स्वतंत्र भारत* के सम्पादक मण्डल के सदस्य रहे।

आपने मोंपासा के अति प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर *यौवन की भूल* 1936 में किया, जो अब अप्राप्य है। विनोदशंकर व्यास के साथ *कहानी कला* की रचना की जो आज भी अपने विषय की प्रमुख कृति है। आपकी अनुवादित तथा सम्पादित पुस्तकों में महात्मा गाँधी के लेखों का संकलन *स्त्रियों की समस्याएँ,* मोतीलाल नेहरू के भाषणों का संकलन *स्वाधीनता का सिंहनाद* तथा टाल्स्टाय के लेखों का संकलन *स्त्री और पुरुष* उल्लेखनीय हैं। आपने जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा का संक्षिप्तीकरण *संक्षिप्त मेरी कहानी* नाम से किया जिसके कई संस्करण छपे। आपने भारतीय कला, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व तथा साहित्य के मूर्धन्य विद्वान डॉ० मोतीचंद्र की एक महत्त्वपूर्ण कृति *क्षेमेन्द्र और उनका समाज* का सम्पादन भी किया है जिसकी भूमिका रायकृष्णदास ने लिखी है।

आपकी नवीनतम कृति *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तित्व चित्र* विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हो रही है।

स्वतंत्रता संघर्ष में अपनी लेखनी के माध्यम से योगदान करने वाले विशिष्ट पत्रकार के रूप में आप 1992 में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा सम्मानित किये गये हैं।

गोपीनाथन
हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति

कालीकट विश्वविद्यालय में हिन्दी के विभागाध्यक्ष जी० गोपीनाथन को वर्धा स्थित महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय का नया कुलपति नियुक्त किया गया है। राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने गोपीनाथन को नियुक्त किया। राष्ट्रपति विश्वविद्यालय के विजिटर हैं। इससे पहले अशोक वाजपेयी इस विश्वविद्यालय के कुलपति थे।

साठ वर्षीय गोपीनाथन को देश-विदेश में शिक्षण का लम्बा अनुभव रहा है। वे अनुवाद के क्षेत्र में हिन्दी के जाने-माने विद्वान हैं। कुलपति के चयन के लिए बनी सर्च कमेटी ने 38 में से तीन नाम राष्ट्रपति के पास भेजे थे। ये तीन नाम सत्यप्रकाश मिश्र, डॉ० वागीश शुक्ल और जी० गोपीनाथन के थे। अन्त में राष्ट्रपति ने इनमें से श्री गोपीनाथन के नाम को मंजूरी दी। महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय पिछले 10 महीने से बिना कुलपति के चल रहा था जिस कारण वर्धा में विश्वविद्यालय भवन के निर्माण कार्य सहित कई काम लटके पड़े थे।

फिर साहित्य की शरण में बॉलीवुड

बालीवुड एक बार फिर साहित्य की शरण में जाता दिखाई दे रहा है। 34वें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सव में इस बार अधिकांश फिल्मों के साहित्यिक कृतियों पर आधारित होने के मद्देनजर यह सवाल उठने लगा है कि क्या फिल्म उद्योग में अच्छी पटकथाओं की कमी हो गयी है, जिसके चलते उन्हें साहित्य की ओर वापस लौटना पड़ रहा है।

फिल्म निदेशालय की निदेशक नीलम कपूर के अनुसार सम्भवत: ऐसा पहली बार हुआ है कि फिल्मोत्सव में दिखाई गयी अधिकांश फिल्में साहित्यिक कृतियों पर आधारित रहीं।

टोरंटो में हिन्दी दिवस

विदेशों में अप्रवासी भारतीयों में अपनी मातृभाषा हिन्दी और भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। पिछले दिनों टोरंटो (कनाडा) में भारत के महादूत दिव्यय मनचंदा, स्टेट बैंक और पैनोरमा इण्डिया ने हिन्दी-दिवस मनाया। भाषा व्यक्ति के व्यक्तित्व ही नहीं उसकी राष्ट्रीयता की भी पहचान है।

जे० पी० जन्म शताब्दी

जे०पी० जन्म शताब्दी के समापन के अवसर पर शहीद स्मारक बसन्तपुर (बलिया) में 11 अक्टूबर 2003 को केन्द्रीय पर्यटन व संस्कृति मंत्री श्री जगमोहन ने 'भोजपुरी सांस्कृतिक केन्द्र' का शिलान्यास किया। उन्होंने कहा जे०पी० को भोजपुरी से विशेष लगाव था, इसलिए उसके उत्थान के लिए भी कार्य किया जायगा। इस केन्द्र के निर्माण में तीन करोड़ रुपये व्यय किये जायेंगे।

कथाकार मार्कण्डेय को हृदयाघात

सुप्रसिद्ध हिन्दी कथाकार मार्कण्डेय को दिल का दौरा पड़ने के बाद संजय गाँधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान में भर्ती कराया गया।

76 वर्षीय साहित्यकार अपनी लघुकथाओं और उपन्यासों के लिए आधुनिक हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं और साहित्य पत्रिका 'कथा' के सम्पादन से जुड़े हैं। उनकी बाईपास सर्जरी दिल्ली के अपोलो अस्पताल में हो चुकी है।

संगमन-9

वाराणसी में 11, 12, 13 अक्टूबर 2003 को श्री देवेन्द्र के संयोजन में संगमन-9 का आयोजन हुआ जिसमें अनेक कथाकारों ने भाग लिया।

प्रथम सत्र का उद्घाटन करते हुए डॉ० नामवर सिंह ने कहा—हमें यह भ्रम नहीं पालना चाहिए कि साहित्य के जरिये कोई क्रान्ति हो जायेगी। या यह कि कहानी कोई तलवार या चाकू है जिससे दुश्मन का सफाया किया जा सकता है। अगर हथियार ही मानने की बात है तो मैं मानता हूँ कि कहानी वह सुई है जिसे हम दुश्मन को बराबर चुभोते रह सकते हैं। उसे चैन से नहीं बैठने दे सकते। यह समझ लेना चाहिए कि उनका लेखन निरर्थक नहीं है। वे तलवार भले न चलायें, लेकिन सुई चुभोते रहें। दुश्मन को चैन से न बैठने दें। यही उनके लेखन की सार्थकता होगी।

हर कालखण्ड का अपना अलग यथार्थ होता है। उस यथार्थ की अभिव्यक्ति के लिए मुहावरे भी नये और अलग गढ़े जाते हैं। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध या उत्तरार्द्ध में भी 60 के दशक में जो मुहावरे गढ़े गये थे वे अन्तिम दशक में कारगर नहीं रह गये। भारतीय समाज, संस्कृति और राजनीति में जो परिवर्तन हो रहे हैं उसमें बहुत सारे नये यथार्थ सामने आ रहे हैं। उन्हें पकड़ने और विश्लेषित करने की जरूरत है। आज सिर्फ यथार्थ को पारम्परिक ढंग से दिखाने से काम नहीं चलेगा क्योंकि विजुवल मीडिया सब कुछ इस तरह से दिखा रहा है कि आप कहानी कविता में उस तरह से दिखा ही नहीं सकते।

आयोजन में कथाकार संजीव, शिवमूर्ति, अखिलेश, मैत्रेयी पुष्पा, प्रियंवद, प्रेमकुमार मणि, नरेन, हृषिकेश सुलभ, संतोष दीक्षित, अवधेश प्रीत, महेश कटारे, जयनंदन, शैलेन्द्र सागर, महुआ मांझी, मधु काकरिया, सुनन्दा राय चौधरी सहित तीन दर्जन कहानीकार शामिल हुए।

पुस्तक संवाद

मैंने मांडू नहीं देखा : खंडित जीवन कोलाज

स्वदेश दीपक

राजकमल प्रकाशन द्वारा आयोजित उपर्युक्त पुस्तक के संदर्भ में पुस्तक संवाद का आयोजन 17 अक्टूबर 2003 को नई दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में हुआ। कोलाज के रूप में रचा गया यह उपन्यास स्वदेश दीपक के 1991 से 1997 तक मनोरोग से ग्रस्त समय की कहानी है। स्वदेशजी ने बताया कि ''याद उन्हें बहुत कम था, पुस्तक में जो-जो विवरण आए हैं वे उन्होंने डॉक्टरों, अस्पताल की रिपोर्टों, अपने परिजनों और मित्रों से एकत्र किए हैं। आज इन्हें पढ़कर मुझे खुद आश्चर्य होता है, डर भी लगता है, कि क्या वाकई यह मैंने ही लिखा है और क्या वाकई मैंने यह सब झेला है।'' उन्होंने कहा कि इस वक्त भी इन्हें पढ़ते हुए मैं सहज नहीं रह पा रहा हूँ।

डॉ० नामवर सिंह ने पुस्तक लोकार्पण से हटकर पुस्तक संवाद के आयोजन का स्वागत किया।

पुस्तक संवाद में मुख्य रूप से कृष्णा सोबती, गगन गिल, श्रीमती शीला संधू, हरीश त्रिवेदी, सौमित्र मोहन प्रभृति ने भाग लिया।

शुरू में राजकमल प्रकाशन के प्रबन्ध निदेशक श्री अशोक महेश्वरी ने पुस्तक संवाद शृंखला का परिचय दिया।

इस अवसर पर उन्होंने भावी योजनाओं के तहत एक विशिष्ट आयोजन *पुस्तक उत्सव* के बारे में भी बताया। यह आयोजन ख्यातिलब्ध पुस्तकों के प्रकाशन का पचास साल पूरे होने पर पुस्तक की स्वर्ण जयन्ती के रूप में मनाया जाएगा।

पृष्ठ 1 का शेष

नारंग तथा उनके इतिहासकार अग्रज श्री जयचंद्र विद्यालंकार जिन्होंने भारत का प्रामाणिक इतिहास लिखा। इंद्रचंद नारंगजी इलाहाबाद आये। हिन्दी भवन कार्यरत हुआ। अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की। उनके कोई संतान नहीं थी, उन्होंने अपने सहायक को ही हिन्दी भवन अचल सम्पत्ति सहित सौंप दिया। किताबघर के जगतरामजी, सन्मार्ग प्रकाशन के प्रेमनाथजी, राजकमल प्रकाशन के देवराजजी, ओमप्रकाशजी, भीमसेनजी, मोतीलाल बनारसीदास के श्री सुन्दरलालजी तथा शान्तिप्रसाद जैन, आत्माराम एण्ड संस के रामलाल पुरी। आज वे हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनके संघर्ष और उद्यम हमारे लिए स्मरणीय हैं। उनके योगदान ने हिन्दी प्रकाशन को समृद्ध किया और प्रकाशन उद्योग को प्रतिष्ठा प्रदान की।

इन उद्यमी प्रकाशकों ने हिन्दी प्रकाशन के प्रमुख केन्द्र बनारस और इलाहाबाद को पीछे कर दिया और आज हिन्दी ही नहीं सम्पूर्ण प्रकाशन जगत का केन्द्रीकरण दिल्ली हो गया है। इसी का सुफल है कि यूनेस्को ने वर्ष 2003-04 के लिए दिल्ली को विश्व-पुस्तक राजधानी के रूप में चयन किया है। आज उन सभी दिवंगत आत्माओं के योगदान को स्मरण करते हुए 'भारतीय वाङ्मय' उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

— पुरुषोत्तमदास मोदी

पुस्तक समीक्षा

स्वदेश की साहित्य चेतना

डॉ० प्रत्यूष दुबे

मूल्य : 200.00

ISBN : 81-7124-339-8

इधर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में एम०फिल० के लिए प्रस्तुत प्रत्यूष दुबे का शोध ग्रन्थ *स्वदेश की साहित्य चेतना* (विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, मूल्य 150 रु०) न केवल ऐतिहासिक महत्त्व का है बल्कि सचमुच में एक सार्थक शोध-कार्य भी है। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान प्रकाशित समाचार-पत्रों की ही नहीं पत्रिकाओं की भी एक सामाजिक भूमिका थी लोगों में राजनैतिक चेतना जगाने की। *सरस्वती, माधुरी, मतवाला* की तरह *स्वदेश* का प्रकाशन भी ऐतिहासिक महत्त्व की दृष्टि से उल्लेखनीय था। एक ऐसे समय में जब ब्रिटिश शासन का दमन चक्र जोरों पर था, एक तरफ रौलेट एक्ट, दूसरी तरफ जलियाँवाला हत्याकाण्ड और राजनीतिक उथल-पुथल के उस दौर में 6 अप्रैल, 1919 को गोरखपुर से पं० दशरथप्रसाद द्विवेदी के सम्पादन में, *स्वदेश* निकलना एक साहसिक काम था। पं० द्विवेदी गणेशशंकर विद्यार्थी के शिष्य थे और विद्यार्थीजी के जेल जाने के दौरान *प्रताप* के कुछ अंकों का सम्पादन कर चुके थे। सीमित साधनों एवं कठिनाइयों के बीच *स्वदेश* का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। पत्र साप्ताहिक था और पत्रिका का उद्देश्य था, 'जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं, वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।' अंग्रेजों की दृष्टि में यह एक खतरनाक साप्ताहिक था जिसके प्रारम्भ होने के पहले ही इसके सम्पादक को 500 रुपये की जमानत राशि जमा करनी पड़ी। लेकिन इसके प्रकाशन पर तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं ने महत्त्वपूर्ण टिप्पणी की। रुक-रुक कर 1919 से 1939 तक यह पत्र जीवित रहा। कई बार इसकी जमानत राशि जब्त की गई। *स्वदेश* के विजयांक के प्रतिबन्धित होने एवं उग्रजी तथा द्विवेदीजी की गिरफ्तारी के बाद इसके सम्पादक बदलते रहे। इस साप्ताहिक का सम्पादन रामनाथलाल सुमन, मुकुटबिहारी वर्मा, रघुपति सहाय आदि ने किया। अतिथि सम्पादक का चलन सम्भवत: इसी पत्र से शुरू हुआ।

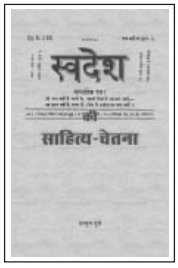

साप्ताहिक *स्वदेश* का चरित्र पूर्णत: राजनैतिक नहीं बल्कि साहित्यिक भी था। स्वाधीनता आन्दोलन के प्रति क्रान्तिकारी चेतना जगाना इसका लक्ष्य था जिससे इस पत्रिका को लेकर अंग्रेजों में घबराहट थी। अन्यथा इसकी जमानत राशि न जब्त की जाती और न बढ़ाई जाती। गाँधीजी के भाषण तो सम्पादकीय टिप्पणी के साथ छपते ही थे, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनों का पूरा विवरण भी। *स्वदेश* की विषय-वस्तु में विविधता ही नहीं व्यापकता भी थी। पत्र के प्रमुख स्तम्भ थे, 'देश-विदेश की हलचल', 'देश की खबरें', 'विदेश की खबरें', 'समाचार-संग्रह', 'फुहार और छींटें', 'अबीर की मूठें', 'गोरखधंधा', 'सामयिक साहित्यिक परिचर्चा', 'सप्ताहभर के मुख्य समाचार' आदि। 'गोरखधंधा' इस पत्र का सबसे लोकप्रिय स्तम्भ था। पत्र के कुछ विशेषांक जो चर्चित हुए, वे थे, प्रेमोपहार अंक, कांग्रेस अंक, होलीकांक, विजयांक आदि। विजयांक में ही रामचन्द्र शुक्ल का प्रमुख निबन्ध 'क्षात्र-धर्म का सौन्दर्य' प्रकाशित हुआ जिसे डॉ० नामवर सिंह ने *चिन्तामणि*-3 में संकलित किया है। इसमें अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकरप्रसाद, निराला, उग्र, सुभद्राकुमारी चौहान, प्रेमचंद, नवीन, गयाप्रसाद सनेही, रघुपति सहाय, फिराक आदि की रचनाएँ छपती थीं, *स्वदेश* में कविता के अलावा कहानी, आलोचना, व्यंग्य भी छपते थे। हिन्दी में इस शोधकार्य की नोटिस ली जानी चाहिए ताकि हम अपनी विरासत से परिचित हो सकें।

— भारत भारद्वाज
'हंस' में

हिन्दी पत्रकारिता

भारतेन्दु-पूर्व से छायावादोत्तर-काल तक

डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह

सम्पादक 'आज' वाराणसी

पृष्ठ : 128 पेपर बैक : 50.00
सजिल्द : 100.00

ISBN : 81-7124-354-1

हिन्दी पत्रकारिता-जगत का सूर्य 'उदन्त मार्तण्ड' 30 मई 1826 ई० को कलकत्ता में उदित हुआ। उसने अपनी प्रखर किरणों से हिन्दी-जगत को प्रकाशित किया। पं० युगलकिशोर सुकुल उसके जन्मदाता थे। 11 सितम्बर 1828 ई० को 'उदन्त मार्तण्ड' अस्त हो गया, किन्तु अस्त होने के बावजूद उसने अपनी प्रखरता से हिन्दी-जगत को जागृत किया। देश की जनता को अभिव्यक्ति की दिशा मिली, वाणी मिली, भाषा मिली, विचार मिले, ज्ञान का द्वार उन्मुक्त हुआ।

1857 ई० के विद्रोह से पूर्व 1850 में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म हो चुका था। 1867 ई० में 17 वर्ष की अवस्था में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 'कविवचन सुधा' को लेकर अवतीर्ण हुए। उन्होंने उद्घोष किया—

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निजभाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल॥

सम्पूर्ण देश के व्यक्तित्व को जागृत करनेवाले उस बीजमंत्र ने देश के बौद्धिक जगत में क्रान्ति कर दी। 1873 ई० में 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 1874 ई० में 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' और उसी वर्ष 'बालाबोधिनी' का प्रकाशन किया।

तिलक के 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' के अनेक वर्षों पूर्व भारतेन्दु ने जयघोष किया—

स्वत्व निज भारत लहै

'बालाबोधिनी' द्वारा समाज को बताया—'नारी नर सम होंहि।'

भारतेन्दु द्वारा प्रसारित चन्द्रिका सारे देश में कला, साहित्य, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न माध्यमों में व्याप्त हो गई।

1877 ई० में बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' निकाला। 1878 ई० में ही बालमुकुन्द गुप्त का 'भारतमित्र' निकला। 1881 ई० में बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' का 'आनन्दकादम्बिनी' निकला। प्रतापनारायण मिश्र का 'ब्राह्मण' 1883 ई० में प्रकट हुआ।

पं० मदनमोहन मालवीय भी पत्रकारिता के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए। कालाकाँकर से 'हिन्दोस्थान' निकला। उन्नीसवीं शताब्दी भारतेन्दु की शताब्दी थी, जिसमें पत्रकारिता के विविध रूपों का विकास हुआ।

बीसवीं शताब्दी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा शुरु की गई 'सरस्वती' से आरम्भ होती है। 1903 ई० में पत्रकारिता-जगत के भीष्म पितामह महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से हिन्दी भाषा और साहित्य को सारस्वत स्वरूप प्रदान किया। द्विवेदीजी के कार्यकाल में भाषा को संस्कार मिला, विषय मिला, विविध ज्ञान-विज्ञान की जानकारी हुई। खड़ी बोली हिन्दी का विकास हुआ। कितने लेखकों, कवियों का जन्म हुआ, प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, निराला सभी ने 'सरस्वती' में प्रवेश पाया।

साहित्य देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का माध्यम बना। 1910 ई० में इलाहाबाद से पं० कृष्णकान्त मालवीय ने 'मर्यादा' निकाली। जयशंकर प्रसाद और महावीरप्रसाद द्विवेदी की विचारधारा में मतभेद होने के कारण 'सरस्वती' में उनकी रचनाओं को स्थान नहीं मिलता था। अत: 1911 ई० में प्रसादजी ने अपने भानजे अम्बिकाप्रसाद के माध्यम से 'इन्दु' पत्रिका निकाली जिसमें छायावादी रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं। बाद में 'सरस्वती' में भी प्रसादजी की रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

1913 ई० में खंडवा से 'एक भारतीय आत्मा' पं० माखनलाल चतुर्वेदी की 'प्रभा' प्रकट हुई। 'मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ में देना तुम फेंक, जिस पथ जाते वीर अनेक' उस उद्घोष से एक नये तेवर के साथ मध्यप्रदेश से निकला। उसी वर्ष कानपुर से गणेशशंकर विद्यार्थी का 'प्रताप' प्रकट हुआ। 1919 ई० में माखनलाल चतुर्वेदी ने जबलपुर से 'कर्मवीर' निकाला जो बाद में खंडवा से निकला। 1919 ई० में उत्तर प्रदेश के पूर्वी छोर गोरखपुर से पं० दशरथप्रसाद द्विवेदी पुलिस की नौकरी का मोह त्याग कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन से प्रभावित होकर गोरखपुर से 'स्वदेश' निकाला। संघर्ष किया, जेल गये, जमानत दी।

1920 ई० में जबलपुर से 'श्रीशारदा' निकली, माखनलाल चतुर्वेदी ने उसका सम्पादन किया। उसी

वर्ष इलाहाबाद से 'चाँद' निकला और काशी से शिवप्रसाद गुप्त ने 'आज' दैनिक निकाला जो अब तक निकल रहा है। 'आज' दैनिक होते हुए अपने समय के साहित्यकारों, मनीषियों—प्रेमचंद, प्रसाद, निराला, उग्र, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, सम्पूर्णानन्द, कमलापति त्रिपाठी, डॉ० भगवानदास, श्रीप्रकाश, गोपीनाथ कविराज प्रभृति की रचनाएँ अपने साप्ताहिक पृष्ठों में प्रकाशित की। 'आज' सम्पादक बाबूराव विष्णु पराड़कर ने सारे देश में हिन्दी पत्रकारिता का मानक प्रस्तुत किया।

1922 ई० में लखनऊ से 'माधुरी' निकली। पं० रूपनारायण पाण्डेय, कृष्णबिहारी मिश्र, प्रेमचंद, शिवपूजन सहाय सभी उस पत्रिका में सहायक थे।

1923 ई० में हास्य-व्यंग्यप्रधान 'मतवाला' कलकत्ता से निकला। महादेवप्रसाद सेठ के उस 'मतवाला' के प्रमुख मतवाले थे मुंशी नवजादिकलाल श्रीवास्तव, शिवपूजन सहाय, निराला और उग्र।

1927 ई० में दुलारेलाल भार्गव ने रूपनारायण पाण्डेय के सम्पादकत्व में लखनऊ से 'सुधा' निकाली।

साहित्यिक पत्रिकाओं की बाढ़ आ गई। देश के कोने-कोने से पत्रिकाएँ निकलने लगीं। 1928 में 'माडर्न रिव्यू' (अंग्रेजी), 'प्रवासी' (बंगला) के प्रकाशक रामानन्द चट्टोपाध्याय ने कलकत्ता से पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के सम्पादकत्व में 'विशाल भारत' निकाला, जो अपने समय की हिन्दी की विशिष्ट पत्रिका थी। 1930 ई० में टीकमगढ़ से बुन्देलखण्ड की लोकसंस्कृति का संवाहक मासिक 'मधुकर' पं० बनारसीदास चतुर्वेदी तथा यशपाल जैन ने निकाला।

1930 ई० में काशी से कहानीप्रधान पत्र 'हंस' प्रेमचंदजी ने निकाला। 1932 ई० में ही प्रेमचंदजी ने 'जागरण' निकाला।

इस प्रकार राजनीति, साहित्य, संस्कृति, कला सभी क्षेत्रों में 'उदन्त मार्तण्ड' की किरणें विभिन्न रूपों में विकीर्ण होती रहीं।

स्वतंत्रता के दो मास पूर्व जून 1947 ई० में अज्ञेय ने दिल्ली से 'प्रतीक' निकालकर साहित्य में स्वतंत्रता के सूर्य का स्वागत किया।

हिन्दी भाषा और साहित्य का जो स्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से आरम्भ हुआ वह विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से बीसवीं शताब्दी के मध्य तक पूर्णता को प्राप्त हुआ। इस दृष्टि से भारतेन्दु-पूर्व से छायावादोत्तर काल तक का साहित्यिक विकास उस युग की पत्र-पत्रिकाओं में ही देखा जा सकता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रथम चरण उन्नीसवीं शताब्दी है तो दूसरा चरण बीसवीं शताब्दी के प्रथम पचास वर्ष।

30 मई 1826 ई० को हिन्दी पत्रकारिता का जन्म हुआ और 19वीं शताब्दी बीतते-बीतते इसका चहुमुखी विकास हुआ। बीसवीं शताब्दी के प्रथम पचास वर्ष पत्रकारिता की दृष्टि से कितने महत्त्वपूर्ण थे, जब दो-दो विश्वयुद्धों और स्वतंत्रता संग्राम के बीच हुए बदलाव ने देश की राजनीति, समाज, साहित्य, भाषा सभी को गहराई से स्पर्श किया।

डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह ने जो हिन्दी पत्रकारिता से चार दशकों से जुड़े हैं, पत्रकारिता के उस प्रवहमान स्वरूप को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है। पत्रकारिता तथा साहित्य के अध्येताओं के लिए पठनीय।

— पुरुषोत्तमदास मोदी

महाभारत का काल निर्णय अर्थात् भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन

महाभारत का काल निर्णय

डॉ० मोहन गुप्त

पृष्ठ : 16 + 208 मूल्य : 300.00

ISBN : 81-7124-292-8

'भारतीय वाङ्मय' में परम्परा से रामायण और महाभारत इतिहास की श्रेणी में आते हैं, किन्तु इतिहासकारों द्वारा इनके काल निर्धारण की चेष्टा प्राय: नहीं की गई है। सामान्य भारतीय मानस की यह अब तक की बहुत बड़ी विडम्बना है कि उसके जीवन और व्यवहार के परम आदर्श राम और कृष्ण इतिहास के काल क्रम में अगोचर रहकर मिथकीय पात्र बनकर ही रहते आए हैं। अत: जब डॉ० मोहन गुप्त ज्योतिष गणना के आधार पर राम का काल 5475 ई०पू० (पृष्ठ 146) कृष्ण का समय (जन्म ई०पूर्व 2045 तथा अवसान 920 ई०पूर्व) (पृष्ठ 189) तथा महाभारत युद्ध का आरम्भ 17 अक्टूबर 1952 ई० पूर्व (पृष्ठ 100) घोषित करते हैं तो भारतीय अवधारणा के इतिहास के पुनर्लेखन में लेखक की गणना के साथ पाठक को इस यात्रा में एक स्वाभाविक आकर्षण दिखता है।

रामायण की तुलना में महाभारत की ऐतिहासिकता पर शोध और कार्यक्रम के निर्धारण की दिशा में पूर्व में भी अनेकश: विचार किया गया है। डॉ० मोहन गुप्त के 'महाभारत का कालनिर्णय' प्रबन्ध का केन्द्रीय आधार ज्योतिष है किन्तु उन्होंने अर्वाचीन और प्राचीन अध्ययन परम्पराओं का तार्किक समाहार किया है। यह भी एक सुखद संतोष का ही प्रसंग है कि डॉ० गुप्त को अपनी ज्योतिषीय गणना में जहाँ कम्प्यूटर संगणना का आधार मिला वहीं पौर्वात्य और पश्चिमी अध्ययन की समृद्ध परम्परा का सम्यक् दृष्टिबोध भी उनमें है।

जैसा कि इस प्रकार के अध्ययन और स्थापना की पूर्वापेक्षा होती है, प्रबन्ध में लेखक ने अनेक मतों यथा श्री सी०बी० वैद्य, वी०जी० अय्यर, शंकर बालकृष्ण दीक्षित, जे०एम० करंदीकर, जी०सी० सेनगुप्त, डॉ० के०एल० दफ्तरी, पी०वी० काणे, कवीश्वर, चन्द्रकान्त बाली, ए०एल० बाशम, रोमिला थापर, भारत सावित्री (वासुदेवशरण अग्रवाल) आदि की स्थापनाओं की विस्तृत समीक्षा भी की है। ज्योतिषीय गणनाओं के अनेक पत्रकों और नामावलियों में सामान्य पाठक न भी भटकना चाहे तब भी उसे भीष्म, युधिष्ठिर, कृष्ण आदि की आयु, महाभारत काल की विभिन्न घटनाओं की तिथियों और महाभारत के अन्त:साक्ष्यों से उनकी संगति देखकर प्रसन्नता ही होगी। (यहाँ मुझे अपने एक मित्र की यह टिप्पणी सटीक लगती है कि वास्तव में महाभारत का युद्ध ही पाण्डवों का कालगणना में उत्पन्न विवाद (दुर्योधन और भीष्म की व्याख्या) के कारण उत्पन्न हुआ था।)

भारतीय पारम्परिक काल गणना जिसमें न्यूनतम अवधि कलियुग की चार लाख बत्तीस हजार वर्ष है, त्रेता के राम और द्वापर के कृष्ण को कुछ हजार वर्ष में कैसे समेट सकती है! डॉ० गुप्त ने इसके समाधान के लिए श्री योगानन्द परमहंस के गुरु श्री युक्तेश्वर की 'दी होली साइंस' के 'दिव्यवर्ष' (पृष्ठ 143) सिद्धान्त को प्रमुख आधार के रूप में स्वीकार किया है। ज्ञातव्य है कि इस मान्यता के अनुसार कलियुग की आयु 1200, द्वापर 2400, त्रेता 3600 तथा सतयुग की 4800 वर्ष है तथा ये युग आरोह और अवरोह क्रम में 12 हजार वर्ष में एक चक्र पूरा करते हैं।

प्रश्न यह है कि जब हमारी दिन प्रतिदिन की घटनाओं की सत्यता निष्पत्ति समकालीन समालोचनाओं से भी सम्भव नहीं हो पाती तब इतने दूर का इतिहास क्या कोई अन्तिम तौर पर लिख सकता है? किन्तु यदि किसी के पास प्रकाश की गति (ज्योतिष!) जैसी प्रखर दृष्टि है तो.....

वृहदारण्यक उपनिषद् में राजा जनक की सभा में 'पारीक्षित' के उल्लेख से अनेक विद्वान और पुरातत्वविद यह भ्रम पालने लगे थे कि सम्भवत: अभिमन्यु पुत्र परीक्षित राजा जनक के पूर्ववर्ती थे। डॉ० गुप्त ने परीक्षित और जन्मेजय आदि नाम के राजाओं की महाभारत काल से पूर्व की स्थिति के समाधार प्रस्तुत कर उस ऐतिहासिक भ्रम का जैसे निवारण कर दिया है जिसके कारण सत्तर के दशक में अयोध्या की खुदाई तक कर डाली गई थी।

साजसज्जा, आवरण और परिशुद्ध मुद्रण की दृष्टि से भी पुस्तक संग्रहणीय है। **—प्रभुदयाल मिश्र**

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तित्व चित्र

ज्ञानचंद जैन

सेवक गुनीजन के चाकर चतुर के हैं,
कविन के मीत चित्त हित गुन गानी के।
सीधेन सों सीधे, महा बाँके हम बाँकेन सों
हरीचन्द नगद दमाद अभिमानी के॥
चाहिबे की चाह, काहू की न परवाह नेही नेह के,
दिवाने दा सूरत निवानी के॥
सरबस रसिक के सुदास दास प्रेमिन के,
सखा प्यारे कृष्ण के, गुलाम राधारानी के॥

भारतेन्दु हरिश्चंद्र

सीढ़ी पर तमाशा देखिए। चार-पाँच हिन्दू, चार-पाँच मुसलमान सिपाही, एक जमादार, दो-तीन उम्मेदवार और दस-बीस उठल्लू के चूल्हे, कोई खड़ा है, कोई बैठा है, हाय रुपया, हाय रुपया सबके जबान पर, पर इसमें सब ऐसे ही नहीं, कोई-कोई सच्चा स्वामिभक्त भी है। कोई रंडी के भड़ुए से लड़ता है,

रुपए में दो आना न दोगे तो सरकार से ऐसी बुराई करेंगे कि फिर बीबी का इस दरबार में दरशन भी दुर्लभ हो जायगा, कोई बजाज से कहता है कि वह काली बनात हमै न ओढ़ाओगे तो बरसों पड़े झूलोगे, रुपये के नाम खाक भी न मिलेगी, कोई दलाल से अलग सट्टा-बट्टा लगा रहा है, कोई इस बात पर चूर है कि मालिक का हमसे बढ़कर कोई भेदी नहीं, जो रुपया कर्ज आता है हमारी मारफत आता है, दूसरा कहता है—बचा हमारे आगे तुम क्या पूचल चर हो, औरतों का भुगतान सब मैं ही करता हूँ।

भारतेन्दु हिन्दी नवजागरण के प्रथम पुरुष हैं। अल्प आयु में इस विराट व्यक्तित्व में कितनी विविधता और रसमयता थी। यह पुस्तक प्यारे हरिश्चन्द्र की कहानी कहती है।

व्यक्तित्व के विविध रंग के अंतर्गत रचनाओं का आत्मचित्रण, माधवी और मल्लिका, सत्यवीर की अग्नि परीक्षा। कृतित्व के विविध आयाम के अन्तर्गत—हिन्दी नाटकों के जन्मदाता, हिन्दी में सिद्धान्तनिष्ठ पत्रकारिता के प्रवर्तक, हिन्दी गद्य के परिष्कारक, निबन्ध, इतिहास तथा पुरातत्त्व। अन्त में में एक दु:खान्त जीवन-यात्रा।

भारतेन्दुजी के जीवन के विविध रंगों को दरसाते अनेक दुर्लभ श्वेत श्याम तथा रंगीन चित्र सर्वप्रथम प्रकाशित। **मूल्य : दो सौ रुपये**

वटवृक्ष की छाया में

कुमुद नागर

अमृतलाल नागर संघर्षपूर्ण जीवन के बावजूद अपने परिवार के लिए वटवृक्ष बने रहे। नागरजी के पुत्र कुमुद नागर ने एक ओर नागर परिवार की चार पीढ़ियों की गाथा प्रस्तुत की है, दूसरी ओर उनके उनके पिता अमृतलाल नागर की जीवनकथा, जो कुमुदजी ने एक भावुक पुत्र की भाँति नहीं, बल्कि एक संवेदनशील कलाकार की हैसियत से लिखी है। नागरजी की रचनात्मक ऊर्जा, पारिवारिक इंटरएक्शन और घरेलू समस्याओं के साथ संघर्षण में उपजती रही है। घर्षण का प्रभाव जिस प्रकार नागरजी पर पड़ा, उसी प्रकार परिवार पर पड़ना स्वाभाविक था। यह प्रभाव परिवार ने किस प्रकार ग्रहण किये, उनके परिप्रेक्ष्य में नागरजी की क्या छवि उभरती है। यह पुस्तक उसे रेखांकित करती है। अपने आप में यह अत्यन्त रोचक और कहीं-कहीं बहुत विचलित कर देनेवाला लेखन है; खासतौर से वह पक्ष जो परम प्रतिभाशील रचनाकारों और कलकारों के तनाव और संघझा को उजागर करता है।

'वटवृक्ष की छाया में' हिन्दी के सामान्य पाठक के लिये तो बहुमूल्य सिद्ध होगी ही, साहित्य के गम्भीर विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिये यह ऐसी सामग्री सम्पन्न है जो कहीं दूसरी जगह उपलब्ध नहीं। पुस्तक में अनेक दुर्लभ चित्र दिये गये हैं।

मूल्य : 200.00

ISBN : 81-7124-346-0

प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु

by

DR. PRITHVIKUMAR AGRAWALA

(Professor, Ancient Indian History, Culture and Archaeology Department, Banares Hindus University)

Vishwavidyalaya Prakashan, Varanasi, 2002 (First Edition)
pp. xviii + 468; 1115 + 2 line drawings, maps and plans + 65 halftone illustrations arranged in XXIV plates with 3 coloured illustrations on the dust cover.
Bound : Rs. 650 Paperback Rs. 450

Reviewed by

R.S. MISHRA

Formerly Associate Professor, Department of History & Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur

Prof. P.K. Agrawala is a bold signature of a school of thought which firmly believes that art/ architecture is an item of culture. Material remains not only reveal the technological level and the successful exploitation of nature by a society through the ages for the physical and mental well being of its members. It also expresses the religious cults, folk beliefs, techniques of worship, general social life and behaviour, ideals, spiritual thoughts and rituals, gods-goddesses, economic and material prosperity, aesthetic philosophy, symbolism, decoration, scientific temperament and much more. The work under review encompasses all above dimensions.

Approach of Dr. Agrawala is analytical and historical. His basic premise is that the cultural thoughts find the best manifestation in art and literature. Study of Indian art and architecture in the background of geographical distribution and chronology establishes a distinct tradition and *jatiya praxis* which is inspired by 'Indianness'. Author not only acknowledges a host of earlier art-historians and archaeologists but has judiciously incorporated their contributions in this work.

The work is profusely illustrated (1117 line drawings, maps and plans and 65 half tone illustrations) for which the publisher must be congratulated. The language and treatment of the subject is commendable. In nut-shell *Prachina Bharatiya Kala Evam Vastu is a magnum opus* as well as a *magnum bonum* for the students of Indian Art and Indian Culture.

The author and publisher of this work have brought under indebtedness the Hindi-readers in general and the academic institutions in particular where the medium of instruction is Hindi. The work is equally useful and important for the teachers and students of History of art and architecture, Fine Arts, aesthetics and Culture. Universities and colleges, teaching the Fundamentals/Foundations of Indian culture will find this work as a welcome addition to their libraries.

मुस्लिम इतिहास पर दो प्रमुख पुस्तकें

भारतीय मुसलमान

डॉ० किशोरीशरण लाल

पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग
जोधपुर तथा हैदराबाद विश्वविद्यालय

पृष्ठ : 12 + 124 मूल्य : 60.00

ISBN : 81-7124-355-X

भारतीय मुसलमान अस्तित्व में कैसे आए तथा भारत में सबसे बड़े अल्पसंख्यक समूह के रूप में उनका विकास कैसे हुआ? मुस्लिम इतिहास के विद्वान् प्रो० लाल ने विभिन्न मुस्लिम तथा भारतीय इतिहासकारों के विचारों को दृष्टिगत रखते हुए भारतीय मुसलमान का ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत किया। इतिहास के अध्येता तथा जनसामान्य के लिए पठनीय।

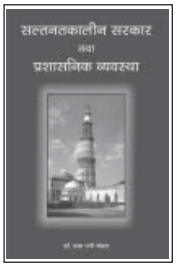

सल्तनकालीन सरकार तथा प्रशासनिक व्यवस्था

डॉ० ऊषारानी बंसल

रीडर, इतिहास विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पृष्ठ : 8 + 104 मूल्य : 50.00

ISBN : 81-7124-348-7

विषय-क्रम

1. दिल्ली सल्तनत में राज्य का स्वरूप, 2. राजत्व का सिद्धान्त, 3. विजारत का विकास तथा प्रगति, 3. विजारत का विकास तथा प्रगति, 4. राजकीय आय के स्रोत तथा भूमि राजस्व सुधार, 5. अभिजात वर्ग की सल्तनत के प्रशासन में भूमिका, 6. उलेमा वर्ग की राजनीति, 7. प्रान्तीय सरकार तथा शासन।

शिव की अनुग्रह मूर्तियाँ

डॉ० शान्तिस्वरूप सिनहा

कला-इतिहास विभाग

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पृष्ठ : 244 मूल्य : 250.00

रेखाचित्र : 4, हाफटोन चित्र : 45

ISBN : 81-7124-338-X

भारतीय संस्कृति में शिव प्रमुख देवता हैं। वैदिक काल से शिव भारतीय जनमानस के आराध्य देव हैं। उनकी अवधारणा और उनके स्वरूप निर्धारण में आंचलिक और जनजातीय या वन्य क्षेत्रों के विभिन्न तत्त्व सम्बद्ध हैं, जिसके कारण शिव को लोकमानस में व्यापक आधार मिला। इस पुस्तक में शिव की अनुग्रह मूर्तियों का वैदिक-पौराणिक ग्रन्थों, शिल्पशास्त्रों और विभिन्न क्षेत्रों एवं कालों के मन्दिरों पर उनके रूपांकन के आधार पर विस्तृत, तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

साखी

सम्पादक

सदानन्द शाही

11, जयनगर, गिलट बाजार, वाराणसी-221 002

'साखी' प्रेमचंद साहित्य संस्थान का त्रैमासिक पत्र है। इसका अंक अक्टूबर-दिसम्बर 2003 अभी प्रकाशित हुआ है। यह अंक नोबल पुरस्कार से सम्मानित वी०एस० नायपॉल के भारत विमर्श पर केन्द्रित है। इसमें नायपाल पर समीक्षात्मक लेख है और नायपॉल की चुनी हुई रचनाओं का अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है। इसमें नायपॉल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र है। नायपॉल विवादास्पद लेखक हैं उन्हें समझने के लिए 'साखी' में महत्त्वपूर्ण सामग्री है। **मूल्य : 50.00**

मन के सहचर

डॉ० रमेशकुमार त्रिपाठी की हाइकू कविताओं का यह तीसरा संकलन है। इसके पूर्व 'मन के बोल' तथा 'अनुभूति कलश' प्रकाशित हो चुके हैं।

तीन पंक्तियों में सूत्रवत कही गई ये कविताएँ चित्र, ध्वनि और भाव प्रस्तुत करने में समर्थ हैं।

पल्लवों पर
बूँदों की टप-टप
रजनी मौन

■■■

माघ महीना
वसन्त-आगमन
शीत, चाँदनी।

■■■

तुम्हारी हँसी
अच्छी आइसक्रीम
गर्मी के दिन।

■■■

गोदी में तुम
सन्निकट वियोग में
भीगी आँखें।

'मन के सहचर' ऐसे शब्द चित्रों का अनुपम संग्रह है। मूल्य : 100.00

प्रकाशक : उमेश प्रकाशन, 100 लूकरगंज, इलाहाबाद

चुनलगीत

भोजपुरी गीतों का संकलन

सम्पादक : कृपाशंकर शुक्ल

मूल्य : 60.00

ISBN : 81-7124-326-6

भोजपुरी साहित्य को संवर्धित एवं संरक्षित करने की दृष्टिकोण से भोजपुरी के समकालीन एवं प्राचीन रचनाकारों की प्रतिनिधि कविताओं का संकलन 'चुनलगीत' एक सार्थक प्रयास है। भोजपुरी विश्व के अनेक देशों में बोली जाती है। बोलियों में जितना विस्तृत क्षेत्र भोजपुरी का है, किसी अन्य बोली का नहीं। यह बोली अपने माधुर्य और सरसता के कारण हृदयग्राही है।

'चुनलगीत' काव्य संग्रह न केवल भोजपुरी के सुवि पाठकों का स्नेह अर्जित करेगा वरन् सम्पूर्ण हिन्दी जगत में अपनी सार्थक उपस्थिति की अनुभूति करायेगा।

जीवंत लोकतंत्र पर शोध

क्या उत्तर प्रदेश का कोई अर्थशास्त्री उत्तर प्रदेश में तबादलों के अर्थशास्त्र पर शोध करने को यूजीसी से वृत्ति पा सकेगा? क्या बिहार के विश्वविद्यालयों का कोई राजनीति विभाग बिहार में अपहरण उद्योग की राजनैतिक जड़ों पर शोध के लिए स्वीकृति दे सकता है?

भारत के जीवंत लोकतंत्र और उसके पेचीदा बुनियादी आयामों पर प्रचलित लीक से हटकर शोध करना आज बड़ा जरूरी है। इस शोधकार्य को करने में शोधार्थी के पसीने भले छूटें, उसे सच्चा रचनात्मक आनन्द भी मिलेगा। लेकिन ऐसे शोध हमारे औपचारिक उच्चशिक्षा तंत्र अथवा शीर्ष संस्थानों द्वारा स्वीकृत नहीं होंगे। वे सब तो असेम्बली लाइन ज्ञान की ऐसी फैक्टरियाँ बन गए हैं, जहाँ फार्मूला चूर्ण विदेशों से आयात किया जाता है और फिर स्थानीय (प्रदूषित) जल मिलाकर बोतलों में ढक्कन भर लगा दिए जाते हैं।

भारतीय राजनीति के जिन आंशिक सत्यों से हमें बीच-बीच में भाषाई मीडिया दो-चार कराता रहता है, उनके तरतीबवार संकलन और शोध के लिए प्रान्तीय अध्ययन संस्थानों की एक पूरी शृंखला बनाने की आज गहरी जरूरत है। ऐसे संस्थानों को यदि ईमानदार गैर-सरकारी स्रोतों से पर्याप्त फण्ड मिल सकें ताकि उसकी सभी नियुक्तियाँ जातीय तथा राजनैतिक दबावों से मुक्त हों, तो यकीन मानिए इन शोध प्रबन्धों के तथ्यों के उजास में भ्रम की टाटी उड़ा देने वाली ज्ञान की वह जबर्दस्त आँधी देश में बहने लगेगी, जिसकी 'कबीर' ने पूर्व घोषणा की थी। **— मृणाल पाण्डे**

सम्पादक हिन्दुस्तान

बंगला, अंग्रेजी और इस्लाम

भूमण्डलीकरण की आँधी में समस्त भारतीय भाषाएँ अपना महत्व खोती जा रही हैं। यह मान लिया गया है कि अंग्रेजी के बिना देश का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। ब्रिटिश शासन के दौरान मैकाले ने अंग्रेजों के शासन के संचालन हेतु कारिन्दे तैयार करने के लिए अंग्रेजी भाषा को प्रतिष्ठित किया। आज वही कार्य देश के सभी भाषा भाषी प्रदेश कर रहे हैं। प्रदेश ही नहीं धर्म और राजनीति से जुड़े लोगों को भी यह भय सता रहा है कि अंग्रेजी के बिना उनका अस्तित्व समाप्त हो जायगा। यह कैसी विडम्बना है?

पश्चिम बंगाल की मार्क्सवादी सरकार अगले शिक्षा सत्र से कक्षा 1 से अंग्रेजी को पुन: प्रतिष्ठित करने जा रही है। कहा जा रहा है कि वैश्वीकरण के परिवेश में जनता की माँग को देखते हुए और बदलते राजनीतिक परिवेश में यह निर्णय लिया गया है। दूसरी ओर कुछ लोगों का विचार है कि बच्चों को पहले अपनी मातृभाषा बंगला की शिक्षा दी जानी चाहिए, उसके बाद कक्षा 5 से उन्हें अंग्रेजी पढ़ानी चाहिए। कुछ लोगों का मत है कि अंग्रेजी कक्षा दो या तीन से पढ़ाई जाय। निजी स्कूलों में प्रारम्भ से ही अंग्रेजी पढ़ाई जाती है, अत: सरकारी स्कूलों को भी उनका अनुकरण करना होगा।

दूसरी ओर मुम्बई में विगत दो वर्षों से कॉन्वेन्ट स्कूलों की नकल पर चार इस्लामिक इंगलिश स्कूल चल रहे हैं जहाँ पूर्णतया इस्लामि परिवेश में अरबी के साथ-साथ अंग्रेजी में इस्लाम की शिक्षा दी जा रही है। बच्चे पढ़ते हैं—ए से अल्लाह, बी से बिसमिल्लाह। स्कूल के संस्थापक सुहेल शेख ने कान्वेन्ट स्कूलों की प्रतिक्रिया स्वरूप ये स्कूल स्थापित किये हैं। अंग्रेजी स्कूलों में टोपी, दाढ़ी और कुर्ता पायजामा पहनने के कारण बच्चों को प्रवेश नहीं दिया गया। ईद पर मेंहदी लगाकर स्कूल आने पर तीनवर्षीय लड़की को धूप में खड़ा होना पड़ा। सुहेल शेख जो स्वयं कान्वेन्ट स्कूल के छात्र रह चुके हैं वे नहीं चाहते कि उनके बच्चे ईसाई प्रार्थना करें और न सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष नतमस्तक हों। उनके स्कूल में मुस्लिम महिला अध्यापक ही नहीं अन्य महिला अध्यापक के लिए बुर्का पहनना अनिवार्य है जो विज्ञान और भूगोल की भी शिक्षा देते हैं। शेख का कहना है कि अन्य धर्मावलम्बियों को भी अपने धर्मानुसार स्कूल चलाने चाहिए ताकि वे अपने धर्म की सही शिक्षा दे सकें। शेख के अनुसार इस्लामिक स्कूलों में इस्लाम की सही शिक्षा दी जाने से परस्पर धर्मों का टकराव नहीं होगा। दूसरी ओर ऐसे कितने ही मुस्लिम हैं जो अपने बच्चों को आज भी अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ाते हैं, वे नहीं चाहते कि उनके बच्चे आधुनिक शिक्षा और ज्ञान से अज्ञान रहें।

धर्म को राजनीति से ही नहीं शिक्षा से भी अलग करने से देश का विकास होगा। आज धर्म निरपेक्ष देशों में शिक्षाविदों के लिए विचारणीय है कि अंग्रेजी और धार्मिक असहिष्णुता के वातावरण में देश की गंगा-यमुनी संस्कृति की किस प्रकार रक्षा की जाय।

— पुरुषोत्तमदास मोदी

अध्यात्मपरक ग्रन्थ

मनीषी, संत, महात्मा

शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150.00
नीब करौरी के बाबा *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 12.00
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ० गिरिराज शाह* 150.00
सोमबारी महाराज *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50.00
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60.00
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 140.00
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy *N.L. Gupta* 400.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म०म०पं० गोपीनाथ कविराज* 250.00
पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी *अशोककुमार चटर्जी* 120.00
Purana Purusha Yogiraj Sri Shayama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400.00
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150.00
करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25.00
महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30.00
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50.00
भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40.00
भारत के महान योगी (भाग 1-10) 5 जिल्द में *विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)* 100.00
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120.00
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 100.00
महात्मा बनादास : जीवन ओर साहित्य *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह* 60.00
पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी* 70.00

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

गङ्गा : पावन गङ्गा *डॉ० शुकदेव सिंह* 25.00
कथा त्रिदेव की *रामनगीना सिंह* 50.00
पूर्ण कामयोग (कामना-सिद्धि और ध्यान के रहस्य) *गुरुश्री वेदप्रकाश* 120.00
उत्तिष्ठ कौन्तेय *डॉ० डेविड फ्राली, अनु० केशवप्रसाद कायाँ* 150.00
सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60.00
सृष्टि और उसका प्रयोजन *मेहेर बाबा* 65.00
वाग्विभव *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
गुप्त भारत की खोज *पाल ब्रंटन* 200.00
मारणपात्र *अरुणकुमार शर्मा* 250.00
वह रहस्यमय कापालिक मठ ,, 180.00
मृतात्माओं से सम्पर्क *अरुणकुमार शर्मा* 200.00
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी ,, 180.00
तीसरा नेत्र (प्रथम खण्ड) ,, 250.00
तीसरा नेत्र (द्वितीय खण्ड) ,, 300.00
मरणोत्तर जीवन का रहस्य ,, 300.00
परलोक विज्ञान ,, 300.00
कुण्डलिनी शक्ति ,, 250.00
भौतिक सत्ता में प्रवेश 200.00
बृहत श्लोक संग्रह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 200.00
स्वामी दयानन्द जीवनगाथा *डॉ० भवानीलाल भारतीय* 120.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00
धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, डॉ० वसुन्धरा मिश्र* 250.00
सोमतत्त्व *सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100.00
श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन *शारदाप्रसाद सिंह* 40.00
जपसूत्रम (प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती (प्रत्येक)* 150.00
वेद व विज्ञान ,, 180.00
रावण की सत्यकथा *रामनगीना सिंह* 60.00
कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता) *हरीन्द्र दवे* 80.00
कृष्ण का जीवन संगीत *डॉ० गुणवंत शाह* 300.00
हिन्दी ज्ञानेश्वरी *अनु० ना० वि० सप्रे* 180.00
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्डों में) *श्री श्यामाचरण लाहिड़ी* 375.00
कथा राम कै गूढ़ (तुलसी) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 125.00
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर) *सं० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 150.00
कृष्नायन *रामबदन राय* 200.00
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 100.00
अनंत की ओर *अशोककुमार* 90.00
रामायण-मीमांसा *करपात्रीजी महाराज* 250.00
भक्ति-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 190.00
श्रीभागवत-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 70.00
श्रीराधा-सुधा *करपात्रीजी महाराज* 50.00
भ्रमर-गीत *करपात्रीजी महाराज* 90.00
गोपी-गीत *करपात्रीजी महाराज* 200.00
भारत सावित्री *वासुदेवशरण अग्रवाल* 200.00
युगान्त *इरावती कर्वे* 50.00
रामायणकालीन संस्कृति *शा०ना० व्यास* 60.00
रामायणकालीन समाज *शा०ना० व्यास* 60.00
भारतीय संस्कृति *साने गुरुजी* 50.00
हमारी संस्कृति के प्रतीक *महादेव शास्त्री जोशी* 12.00
हिन्दू धर्म *वियोगी हरि* 15.00
सुखी जीवन *एल०पी० पाण्डेय* 90.00

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के प्रमुख ग्रन्थ

भारतीय धर्म साधना 80.00
क्रम-साधना 80.00
अखण्ड महायोग 80.00
श्रीकृष्ण प्रसंग 250.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा 130.00
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100.00
श्री साधना 50.00
दीक्षा 80.00
सनातन-साधना की गुप्तधारा 100.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2) 80.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50.00
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन) 300.00
कविराज प्रतिभा 64.00
ज्ञानगंज 60.00
प्रज्ञान तथा क्रमपथ 80.00
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना 50.00
परातंत्र साधना पथ 40.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 1) 200.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 2) 120.00
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 40.00
काशी की सारस्वत साधना 35.00
भारतीय साधना की धारा 30.00

योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व

सुखी जीवन : कैसे ? *डॉ० एल०पी० पाण्डेय* 90.00
योग साधना (80 चित्रों सहित) *दुर्गाशंकर अवस्थी* 120.00
योग के विविध आयाम *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40.00
दीर्घायु के रहस्य *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 50.00
अपने व्यक्तित्व को पहचानिए *डॉ० सत्येन्द्रनाथ राय* 50.00
साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250.00

संत महात्मा : जीवनचरित

विवेकानन्द : रोमां रोलां 80.00
रामकृष्ण परमहंस : रोमां रोलां 125.00
महात्मा गाँधी : रोमां रोलां 120.00
चैतन्य महाप्रभु *अमृतलाल नागर* 90.00
आदि शंकराचार्य *डॉ० जयराम मिश्र* 175.00
उत्तर योगी : (श्री अरविन्द : जीवन और दर्शन) *शिवप्रसाद सिंह* 200.00
भगवान् बुद्ध *धर्मानन्द कोसम्बी* 160.00
गुरु नानकदेव *डॉ० जयराम मिश्र* 125.00
मानवपुत्र ईसा *डॉ० रघुवंश* 160.00
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम *डॉ० जयराम मिश्र* 100.00
रामभक्त शक्तिपुंज हनुमान ,, 50.00
लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण ,, 90.00
महर्षि दयानन्द *यदुवंश सहाय* 200.00
स्वामी राम *डॉ० र०श० केलकर* 120.00

स्वामी रामतीर्थ *डॉ० जयराम मिश्र* 200.00
शिरडी साईं बाबा (दिव्य महिमा)
डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त 60.00
सत्य साईं बाबा (जीवन और संदेश)
डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त 150.00
पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) :
(जीवन और मिशन) *डॉ० इकबाल अहमद* 75.00
संत रैदास *डॉ० योगेन्द्र सिंह* 125.00
डॉ० भीमराव अम्बेदकर :
(व्यक्तित्व के कुछ पहलू) *मोहन सिंह* 100.00
योगी कथामृत *परमहंस योगानंद* 70.00
राजा राममोहन राय *डॉ० के०सी० दत्त* 150.00
लोकनायक समर्थगुरु रामदास
डॉ० सच्चिदानन्द परलीकर 175.00

इतिहास, संस्कृति और कला

Ancient Indian Administration & Penology *Paripurnanand Verma* 300.00
Benaras : The Sacred City *E.B. Havell* 150.00
Prinsep's Benares Illustrated *James Prinsep*
Int. by Dr. O.P. Kejariwal 800.00
Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200.00
Life in Ancient India
Dr. Mahendra Pratap Singh 100.00
The Imperial Guptas Vol. I-II
Dr. P.L. Gupta (Each) 200.00
प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति
प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर 250.00
भारतीय मुसलमान *डॉ० किशोरीशरण लाल* 60.00
महाभारत का काल निर्णय *डॉ० मोहन गुप्त* 200.00
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा
डॉ० लल्लनजी गोपाल 150.00
प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक
डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव 200.00
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ
डॉ० श्रीराम गोयल 50.00
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ " 120.00
ग्रीक-भारतीय (अथवा यवन)
प्रो० ए०के० नारायण 300.00
प्राचीन भारत *डॉ० राजबली पाण्डेय* 150.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-1 : मौर्य-काल से कुषाण(गुप्त-पूर्व) काल तक) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-2 : गुप्त-काल 319-543 ई०) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 80.00
गुप्त साम्राज्य *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 200.00
भारतीय वास्तुकला *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 100.00
भारत के पूर्व-कालिक सिक्के " 170.00
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ " 45.00
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ
(600 से 1200 ई.) *डॉ० ओंकारनाथ सिंह* 70.00
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल 450.00
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु " 200.00
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल 120.00
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला
डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी, डॉ० कमल गिरि 150.00
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण " 325.00
भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क
डॉ० आर० गणेशन 250.00
इतिहास दर्शन *डॉ० झारखण्ड चौबे* 150.00
मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन
डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव 80.00
दिल्ली के सुलतानों की धार्मिक नीति
(1206-1526 ई.) *डॉ० निर्मला गुप्ता* 80.00
सल्तनतकालीन सरकार तथा
प्रशासनिक व्यवस्था *डॉ० उषारानी बंसल* 50.00
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650.00
काशी की पाण्डित्य परम्परा
पं० बलदेव उपाध्याय 600.00
काशी के घाट : कलात्मक एवं
सांस्कृतिक अध्ययन *डॉ० हरिशंकर* 300.00

पुस्तक प्राप्त

लौहपुरुष जगन्नाथ
डॉ० विश्रान्त वसिष्ठ

थानेदार जगन्नाथ की रोचक कहानी है जो अपने कार्य-शैली से लौह पुरुष बना।

मूल्य : 200 रुपये

प्रकाशक : भारतीय गुरुकुलम्
13 ए, विजय मुखर्जी रोड, हावड़ा-711 106

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 4 **नवम्बर 2003** **अंक : 11**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: Offi. : (0542) 2421472, 2353741, 2353082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2353082